ज्ञानामृत

अप्रैल, 1987 वर्ष 22 ❋ अंक 10 मूल्य 1.50

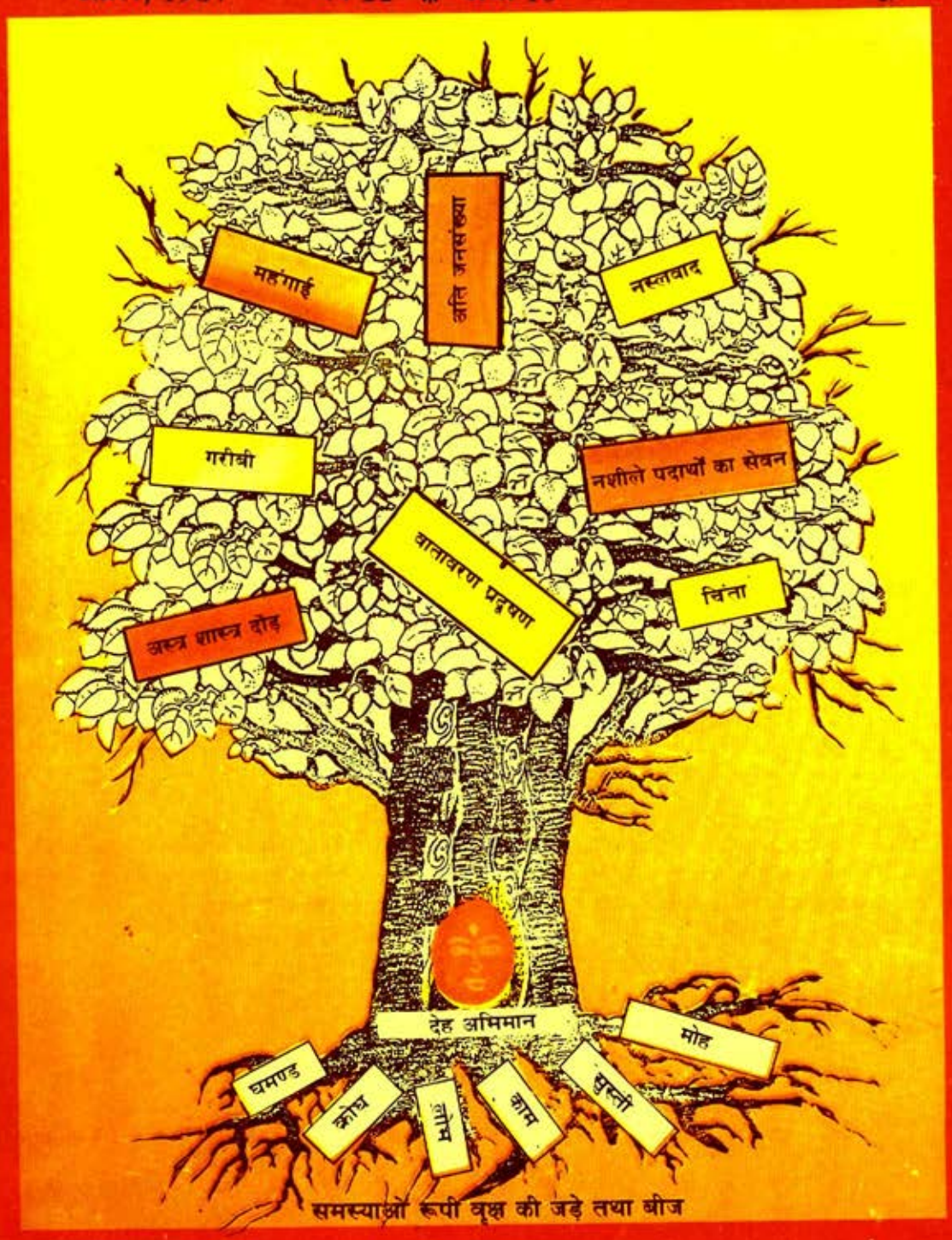

समस्याओं रूपी वृक्ष की जड़े तथा बीज

सर्व समस्याओं का कारण मानव के नकारात्मक संस्कार है। ये देह-अभिमान से उत्पन्न होते हैं। देह-अभिमान समस्याओं रूपी वृक्ष का बीज है। आध्यात्मिक-ज्ञान ही सर्व समस्याओं तथा दुःखों का एकमात्र साधन है।

माउंट आबू: भ्राता जेड.आर. अनसारी, भारत के पर्यावरण तथा वन मंत्री के पांडव भवन में पधारने पर ब्र.कु. दादी प्रकाशमणि जी उन्हें ईश्वरीय सौगात देती हुई।

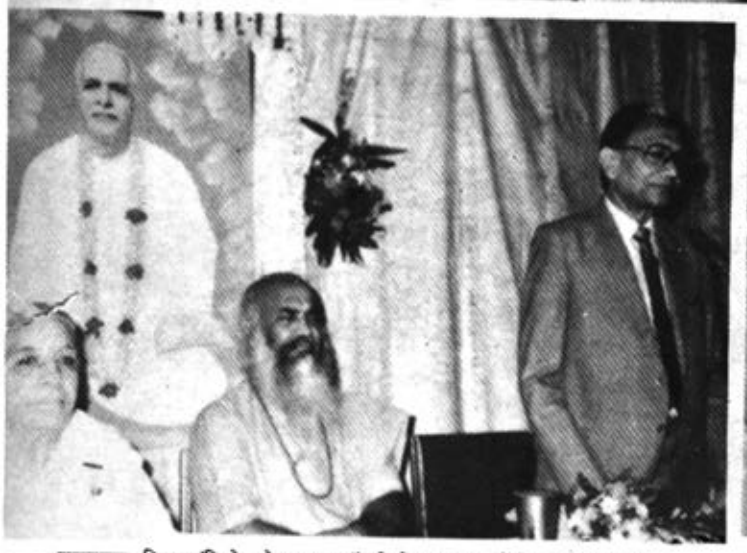

कलकत्ता: शिवजयंति के महोत्सव पर डॉ. जी.के. सराफ अपने विचार प्रकट करते हुए। मंच पर विराजमान हैं ब्र.कु. दादी निर्मलशांता जी तथा स्वामी देवानंद सरस्वती जी।

पुरी: स्वर्ण जयंति के यादगार रूप में ब्र.कु. निरूपमा केंद्रीय मंत्री भ्राता चिंतामणि पाणीग्राही तथा भ्राता हरिशंकर पांडे, आयुर्वेदिक कॉलेज के अध्यक्ष को श्रीकृष्ण का चित्र सौगात देते हुए।

बम्बई: कोलाबा सेवाकेंद्र द्वारा शिवजयंति समारोह में (बाएं से) बी.के. रमेश भाई, नारी गुरुसहानी, ए.डी. टाटेड, श्री सुद्रहीन एच. डाँया, बम्बई के शरीफ, ब्र.कु. नलिनी तथा ब्र.कु. विनायक भाई।

माउंट आबूः इंटरनेशनल रीट्रीट 'परिवर्तन के अवसर पर पधारे विदेशी प्रतिनिधि।

इंदौर में आयोजित मानव विकास आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए पुलिस महा-निरीक्षक भ्राता बी.आर. लूथरा, महापौर भ्राता बल्लभ शर्मा, ब्र.कु. ओमप्रकाश जी तथा ब्र.कु. सुदेश बहिन।

मंडी (हिमाचल प्रदेश) में हुए स्वर्णिम युग शांति प्रदर्शनी का उद्घाटन हिमाचल के मुख्यमंत्री भ्राता वीरभद्र सिंह जी करते हुए। साथ में स्वास्थ्य मंत्री भ्राता कौलसिंह जी तथा ब्र.कु. भाई-बहिनें।

कटक: उड़ीसा के कृषि एवं सहकारी मंत्री भ्राता रास बिहारी बेहरा जी विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात लेते हुए।

बैंगलोर: शिवरात्रि समारोह में बेलीमठ के स्वामी श्री गुरुसिद्दप्पा ईश्वरप्पा जी अपने विचार प्रकट करते हुए।

जालोर: शिवरात्रि के महोत्सव पर ब्र.कु. मोहिनी बहिन प्रवचन करते हुए। मंच पर (बाएं से) भ्राता ताजीव हुसैन, डिप्टी एस.पी. मिश्रालाल जी, एस.डी.ओ. तथा केवल कुमार जी, ए.डी.एम.

कवाली (आ.प्र.): ब्र.कु. पदमा, आ. प्रदेश के मुख्यमंत्री भ्राता एन.टी. रामाराव को 'सर्वात्माओं का पिता' का चित्र भेंट करते हुए।

अमृत-सूची

१.	तिनके का सहारा	१
२.	स्वरूप-विस्मृति और प्रेम-विकृति ही सर्व समस्याओं का मूल (सम्पादकीय)	२
३.	खुदा-दोस्त	५
४.	माफ़ कीजिए	७
५.	दो पहलू	८
६.	चरित्रवान समाज के सृजन में तत्पर—अनोखा विश्वविद्यालय	९
७.	सचित्र सेवा समाचार	१२
८.	अन्ते या मति सा एव गति	१३
९.	मृत्यु	१६
१०.	गज़ल	२०
११.	सेवा समाचार (सचित्र)	२१
१२.	गरीबी का कारण तथा निवारण	२५
१३.	चिड़िया चुग गई खेत, अब पछताये क्या होत !	२६
१४.	एकता और अनेकता का चक्र	२७
१५.	गीत	२८
१६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	२९

सूचना

ज्ञानामृत का नया वर्ष जुलाई मास से प्रारम्भ हो रहा है। डाक खर्च में तीन गुना वृद्धि हो जाने के कारण तथा पेपर और अन्य मूल्यों में वृद्धि के कारण **ज्ञानामृत** का शुल्क बढ़ाया गया है। आगामी वर्ष के शुल्क निम्नलिखित है:—

1. वार्षिक शुल्क	20 रुपये
2. अर्द्ध मासिक	10 रुपये
3. प्रति ज्ञानामृत	1.75 पैसे
4. आजीवन शुल्क	250 रुपये

नियम 8 (फार्म IV) नियम, 1956

पत्र का नाम	: ज्ञानामृत
अवधि	: मासिक
मालिक	: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय
मुख्य सम्पादक	: जगदीश चंद्र हसीजा
सम्पादक	: ब्र.कु. आत्मप्रकाश
प्रकाशक	: ब्र.कु. आत्मप्रकाश
मुद्रक	: ब्र.कु. आत्मप्रकाश
नागरिकता	: भारतीय
पता	: डी 9/19 कृष्णा नगर, देहली-51

तिनके का सहारा

आज मनुष्य विकारों रूपी विषय वैतरणी में खूब गोते खा रहा है। गले तक वह डूब ही चुका है। सतयुग और त्रेतायुग में उसे जो पवित्रता का ताज और सोने का ताज प्राप्त था, वह दोनो ताज तो विकारों के थपेड़ों में बहकर लुढ़क गये हैं। मनुष्य की आत्मिक दृष्टि-रूपी ऐनक भी इसी में ही खो गई है। ज्ञान और योग का आधार-दण्ड तो उस निर्बल के हाथ से पहले से ही जाता रहा था। दो युग भक्ति करते-करते मनुष्य का माथा खूब घिस गया है और पैसा देते-देते उसका सिर मुंड गया है। आज वह बेसहारा होकर सुख-शांति के दाता, पतित-पावन परमात्मा को इस विषय-सागर में ढूंढ और पुकार रहा है। परंतु वह यह नहीं जानता कि पतितों को पावन करने वाला पिता परमात्मा इस विषय-सागर रूपी संसार में सर्व-व्यापक नहीं है बल्कि वह तो इससे बाहर निकालने वाला, स्वयं इससे न्यारा है और ज्योति-बिंदु शिव है।

आज परमात्मा के विषय में यह बात सुनकर कि "वह सर्वव्यापक नहीं है, बल्कि एक ज्योतिर्बिंदु है," लोग आश्चर्य से कहते हैं—"हैं ! क्या कहा !! परमात्मा एक ज्योतिर्बिंदु है ? बस, परमात्मा इतना छोटा-सा, एक तिनका-सा है ?" हम अनुभव के आधार पर दुहराकर कहते हैं—"हां, हां, इस विषय-सागर में डूबते हुए मनुष्यों को उस तिनके का ही सहारा है।"

अगर परमात्मा इस विषय-सागर में यत्र-तत्र-सर्वत्र होता तो मनुष्य को उसका सहारा ढूंढना न पड़ता और उसकी ऐसी हालत भी न होती जैसी कि आज है। परमात्मा तो इस भवसागर से निकालने वाला, इसके बाहर, किनारे पर के एक तिनके की तरह सहारा है, वह इस विषय-सागर में नहीं है। माया के जिस भंवर से अथवा जिस दलदल से मनुष्य स्वयं को भी निकालना चाहता है, उसमें परमात्मा को व्यापक मानना उसकी भूल है !

अब मनुष्य को चाहिए कि ज्योतिर्बिंदु परमात्मा शिव ही की स्मृति में स्थित होकर सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शांति को प्राप्त करे अथवा मुक्ति और जीवनमुक्ति का भागी बने। □

सम्पादकीय

स्वरूप-विस्मृति और प्रेम-विकृति ही सर्व समस्याओं का मूल

(मुखपृष्ठ के चित्र से सम्बंधित)

मनुष्यात्मा न केवल चेतन है, प्रकाश-स्वरूप है और अनादि-अविनाशी बिंदु रूप है बल्कि प्रेम उसका एक स्वाभाविक एवं अमिट गुण है । कोई भी मनुष्यात्मा किसी भी काल में 'प्रेम' के बिना नहीं होती । हां, उसका प्रेम पहले शुद्ध होता है और बाद में विकृत हो जाता है । प्रेम जब देह-केन्द्रित होता है अथवा वासना-भोग का रूप ले लेता है, तब उसे **'काम'** कहा जाता है; जब वह दैहिक सम्बंध में अनुरागात्मक हो जाता है तो उसे **'मोह'** कहा जाता है; वह किन्हीं भक्ष्य पदार्थों या धन आदि के प्रति लालसा का रूप ले लेता है तो उसे **'लोभ'** कहा जाता है और जब अन्य देहधारियों तथा पदार्थों से न होकर अपने-आप ही से होता है तब उसे **'स्वार्थ'** कहा जाता है । अतः 'प्रेम' तो पतित व्यक्ति में भी होता है परंतु उस अवस्था में प्रेम की विकृति होने से वह 'विकार' कहलाता है । **वास्तव में 'विकार' स्वतंत्र रूप से कुछ नहीं हैं बल्कि वे प्रेम ही की विकृति का या उससे उपजने वाले परिणाम का दूसरा नाम हैं।**

काम, मोह, लोभ और स्वार्थ के बारे में तो हमने कह ही दिया है कि वे प्यार की विकृति ही के विभिन्न नाम हैं परंतु देखा जाए तो क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान आदि विकार भी प्रेम ही की विकृति के परिणाम हैं अथवा उस विकृति की उपज हैं क्योंकि क्रोध मनुष्य को तभी आता है जब उसकी काम वासना, उसकी लोभ वृत्ति, उसकी मोह-ममता या उसकी स्वार्थ भावना तृप्त नहीं होती । **क्रोध स्वतंत्र रूप से कोई विकार नहीं है बल्कि काम, मोह, लोभादि की पूर्ति न होने का परिणाम है। ऐसी ही स्थिति ईर्ष्या, द्वेष और घृणा की है। ये कोई स्वतंत्र रूप से विकार नहीं हैं बल्कि जब कोई मनुष्य अन्य किसी की काम वासना, मोह-ममता, लोभ वृत्ति या स्वार्थ भावना की पूर्ति में बाधा उपस्थित करता है तो उसके प्रति दूसरे को ईर्ष्या, घृणा, द्वेष आदि भाव पैदा होते हैं और उन्हीं में वह अवगुण भी ढूंढने लगता है तथा उन्हीं की निंदा करता और उन्हीं से वैर-विरोध, वैमनस्य करता है।** इसी प्रकार, अभिमान भी स्वतंत्र रूप से कोई विकार नहीं है बल्कि जब मनुष्य की लोभ, मोहादि वृत्तियां किसी मात्रा में पुष्ट अथवा 'तृप्त' होती हैं, तभी उसे अभिमान होता है । तब वह अपने को बहुत बड़ा मानने लग जाता है।

सतयुग से कलियुग तक की कहानी एक प्रेम-कहानी है

यदि इस दृष्टि से देखा जाए तो सतयुग के आरम्भ से लेकर कलियुग के अंत तक का इतिहास एक प्रेम-कहानी (Love Story) ही है । सतयुग और त्रेतायुग में प्रेम शुद्ध रूप में होता है । शुद्ध प्रेम के कारण ही सतयुग में सृष्टि स्वर्गमय है । शुद्ध प्रेम न हो तो सतयुग और कलियुग में कोई अंतर ही नहीं रह जाएगा । त्रेतायुग में प्रेम की शुद्धि की कलाएं कुछ कम हो जाती हैं और द्वापर युग से प्रेम विकृत होना शुरू होता है।

प्रेम की शुद्धि ही का दूसरा नाम पवित्रता है

अतः प्रेम की शुद्धि ही दूसरे शब्दों में 'पवित्रता' या निर्विकारिता है और प्रेम की अशुद्धि ही विकार अथवा अपवित्रता है । शुद्ध प्रेम से सभी गुण मानव के जीवन में एक-साथ धारण होने लगते हैं और अशुद्ध प्रेम से उसमें अवगुण, दुर्गुण अथवा आसुरी गुण एक-साथ आने लग जाते हैं क्योंकि जब किसी के प्रति प्रेम हो तो उसके अवगुण दिखाई नहीं देते और उसके प्रति हम मधुरता, सहनशीलता, त्याग आदि का व्यवहार करते हैं और जब प्रेम मोह, लोभ आदि का रूप धारण कर लेता है तभी सहनशीलता, सन्तोष, मधुरता आदि का अभाव होकर असहिष्णुता, असन्तोष और कटुता आदि दुर्गुण पनपते हैं ।

अतः इस दृष्टि से देखा जाए तो संसार में सभी समस्याओं का मूल **'प्रेम की विकृति'** ही है । आज जब हम कहते हैं कि संसार में प्रेम नहीं रहा तो वास्तव में हमारे कहने का भाव यही होता है कि **पवित्र** प्रेम नहीं रहा क्योंकि काम, मोह, लोभ आदि के रूप में व्यक्तियों तथा पदार्थों के प्रति **अपवित्र** प्रेम तो होता ही है।

ईश्वरीय ज्ञान तथा योग आदि का लक्ष्य प्रेम पवित्रीकरण ही है

इसी 'प्रेम' नामक स्वाभाविक गुण की शुद्धि के लिये तो प्रेम के सागर परमपिता परमात्मा अवतरित होकर ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग आदि की शिक्षा देते हैं । **सतयुग की स्थापना वास्तव में पवित्र प्रेम-भाव ही की पुनः स्थापना है। 'धर्म की स्थापना' भी दूसरे शब्दों में सम्बंधों में अपवित्र प्रेम के स्थान पर पवित्र प्रेम की स्थापना ही है।** ईश्वरीय ज्ञान देने का प्रयोजन यही है कि मनुष्यात्मा को यह समझाया जाए कि प्रेम जब काम, लोभ, मोह या स्वार्थ का रूप धारण कर लेता है तो वह क्रोध और अभिमान को भी जन्म देते हुए और ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि का भी रूप लेते हुए सर्व दुःखों का कारण बन जाता है और कि जब वह ब्रह्मचर्य, सन्तोष आदि को साथ लेकर शुद्ध रूप में होता है तो इस सृष्टि के सभी झगड़े-रगड़े, सभी वैर-वैमनस्य, सभी बन्धन-बटवारे, सभी पाप-संताप और सभी कष्ट-कलेश मिट जायेंगे । **अतः ज्ञान सार रूप में यही समझ है कि तुम आत्मा हो, आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर आत्मिक (न कि दैहिक) प्रेम करो** । देह और प्रकृतिकृत वस्तुओं से प्यार करना एक प्रकार का भौतिकवाद (Materialism) है, आत्मिक प्यार करना ही आध्यात्मवाद (Spiritualism) है। आत्माओं का परमपिता परमात्मा है; उससे प्यार होने से प्यार का शुद्धिकरण होता है— यही रहस्य ज्ञान का सार है । इसी के परिणामस्वरूप आत्माएं विश्व को एक विशाल कुटुम्ब मानकर आपस में भ्रातृत्व रूप प्रेम से व्यवहार करने लगती हैं और इसी प्रक्रिया से सतयुग की स्थापना हो जाती है।

सहज राजयोग भी वास्तव में आत्मा का प्यार (Love–link) परमात्मा से जोड़ना है । इसीलिए योग की परिभाषा करते हुए कहा गया है कि 'लग्न (ईश्वरीय प्रेम) में मग्न होना ही योग है।' दूसरे शब्दों में आत्मा को परमात्मा के प्यार में **सर्व-भावेण** स्थापित करना ही 'योग' है । इसी से ही सभी संस्कार परिवर्तित अर्थात् शुद्ध होते हैं ।

सभी समस्याओं का मूल प्रेम की विकृति अथवा शुद्ध प्रेम का अभाव है

इस प्रकार के विश्लेषण से हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि संसार में जितनी भी समस्याएं हैं उनका मूल कारण शुद्ध प्रेम का अभाव है अथवा उनके मूल में प्रेम की विकृति ही है । उदाहरण के तौर पर नारियों से छेड़छाड़ (Eve–teasing) बलात्कार (Rapes), अपहरण (Abductions), वेश्यावृत्ति (Prostitution), अश्लील चित्रण (Obscenity) आदि प्रेम की विकृति ही के कारण अथवा दैहिक प्रेम के कारण हैं जो कि स्वरूप-विस्मृति का परिणाम है । सभी लड़ाइयां-झगड़े (Wars), हिंसादि शुद्ध प्रेम के अभाव ही के कारण हैं । सभी प्रकार के शोषण (Exploitation), लूट-खसूट, नारी-दहन (Women–burning) अथवा दहेज-मृत्यु (Dowry deaths) आदि लोभ अथवा स्वार्थ ही का तो परिणाम है। मिलावट (Adulteration), भ्रष्टाचार (Corruption), गबन (Embazzelment), ज़खीराख़ोरी (Hoarding), चोर-बाज़ारी (Blackmarketting) स्मगलिंग (Smuggling), आदि भी इसी लोभादि के रूप हैं और, ये काम, लोभ, स्वार्थ आदि प्रेम ही की विकृति अथवा अभाव के रूप हैं । निर्धनता, जो कि पूंजीपतियों द्वारा शोषण और निदर्यतापूर्ण व्यवहार का परिणाम है, भी वास्तव में पूंजीपतियों में भ्रातृवत स्नेह के अभाव ही का रूपान्तरण है । साम्राज्यवाद (Imperialism) भी प्रेम के अभाव का द्योतक है क्योंकि प्रेम तो त्याग की ओर ले जाता है न कि हड़पना सिखाता है । रंग-भेद और जाति-भेद (Racism and Casteism) भी प्रेम की विकृति ही का परिणाम हैं । अतः यदि आज मनुष्यों में परस्पर शुद्ध प्रेम स्थापित हो जाए तो सभी समस्याओं का हल हो जाएगा और सतयुग की पुनः स्थापना हो जायेगी ।

जैसे कि पहले बताया गया है, प्रेम की विकृति का कारण है प्रेम का देह-केन्द्रित, देह-आधारित और वस्तु-विषयक होना । जब प्रेम करने वाला स्वयं को देह मानता है और दूसरों को भी देह-दृष्टि से देखता है अथवा जब उसका प्रेम आत्माओं से न होकर विषयों या वस्तुओं से होता है तभी उसका प्रेम भोगवादी (Sensual) या भौतिकवादी (Materialistic) हो जाता है । वही प्रेम की विकृति है। इसके विपरीत यदि प्रेम करने वाले का स्वरूप का ज्ञान हो और स्वरूप में उसकी स्थिति हो, अर्थात् यदि वह स्वयं को 'आत्मा' निश्चय करे तथा दूसरों को भी आत्मिक दृष्टि से देखे तो उसका प्यार पवित्र होगा और उस सभी प्रकार के नकारात्मक भाव (Negative thoughts) तथा विकार-युक्त व्यवहार (Vicious behaviour) समाप्त हो जायेंगे और उनके परिणामस्वरूप सभी समस्याओं का भी एक-साथ हल हो जायेगा और संसार में सभी प्रकार के सुखों की नींव सुदृढ़ हो जायेगी। यही सतयुग के शुभागमन का अग्रदूत होगा । इस उद्देश्य की

पूर्ति के लिए स्वरूप का ज्ञान होना, स्वरूप की स्मृति में स्थित होना तथा स्वरूप में टिककर कर्म करने का अभ्यास करना ज़रूरी है और साथ-साथ परमपिता परमात्मा से सर्व-सम्बंध जोड़कर सभी सम्बंधों को पवित्र प्रेम से सींचना अथवा उनका नवीकरण (Renewal) आवश्यक है। इसी के लिए ही ईश्वरीय ज्ञान, सहज राजयोग तथा दिव्यगुणों की धारणा नामक विषयों की धारणा अथवा उनका अभ्यास आवश्यक है। इससे यह संसार सुखमय हो जाएगा। मुखपृष्ठ पर सभी समस्याओं का वृक्ष रूपी चित्र यही प्रदर्शित करता है कि छह विकार ही सभी कष्टों की जड़ हैं और आत्मा को भूलने से प्रेम की विकृति ही इन विकारों का रूप लेती है और इस विकृति का अब अंत करना है।

—जगदीश

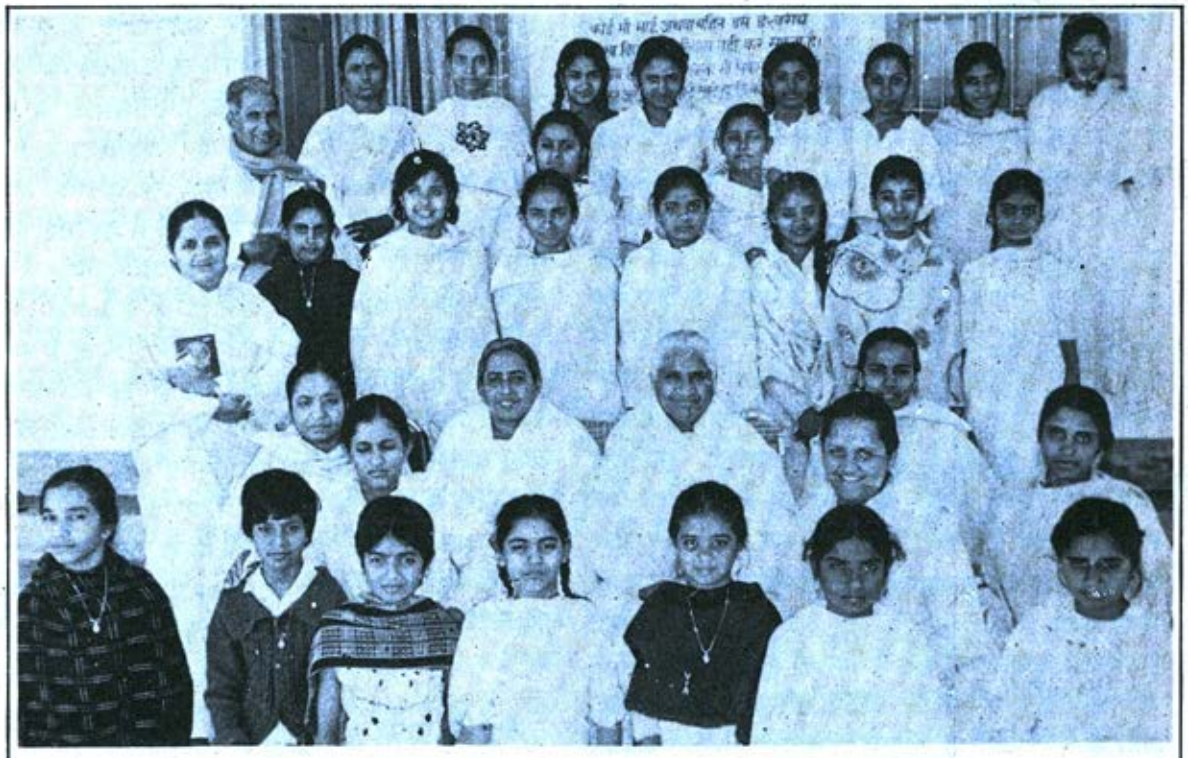

माऊंट आबू में फोरेनर्स की रीट्रीट में भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले अहमदाबाद नारायणपुरा के आध्यात्मिक शिक्षण गृह के बच्चे दादी जी के साथ दिखाई दे रहे हैं।

ब्यावरा में संसद सदस्य, फिल्म अभिनेता सुनील दत्त को ब्र.कु. सरला तारा बहन ईश्वरीय सौगात तथा परमात्मा का परिचय देते हुए।

"खुदा-दोस्त"

बी.के. सूरज कुमार, माउंट आबू

"हम भगवान के काम आ गये—" यह विचार ही तन-मन को रोमांचित कर देता है । उन महान विभूतियों के भाग्य की सराहना किन शब्दों में करें जिनका तन, मन, धन भगवान के काम आ गया । जब भगवान ने इस सृष्टि पर यह देखने के लिए नजर दौड़ाई कि इस सृष्टि को नूतन करने के लिए कौन-कौन योग्य हैं, तो उनकी नज़र जिन महान आत्माओं पर पड़ी—वे सचमुच ही परम भाग्यशाली हैं । सज्जन लोग कहा करते हैं—कि तुम जीवन में किसी के काम आओ । अब विचार करो जो लोग भगवान के काम आये, वे कौन होंगे !

कुछ वर्ष पूर्व, जब यह एहसास हुआ कि खुदा-दोस्त बनकर खुद आया है तो मैंने इस दोस्ती का सम्पूर्ण फायदा उठाने का संकल्प किया । जिसका दोस्त स्वयं भगवान हो, उसे कहीं भी चिंता क्यों—यह स्मृति, सदा मुझे बेगमपुर का बादशाह बनाये रही । जिसका दोस्त सर्वशक्तिवान हो, उसे भय किसका—यह निश्चय मुझे निर्भयता के सुदृढ़ पथ पर ले आया । जिसका दोस्त करनकरावनहार व बिगड़ी को बनाने वाला भगवन हो, उसे तनाव क्यों—यह विश्वास सदा ही मुझे हल्का बनाता रहा और स्वप्न में भी कभी बोझ महसूस नहीं हुआ ।

भगवान को अपना दोस्त बनाकर मैंने इस दोस्ती का लाभ उठाया, मुख्य रूप से शारीरिक व्याधियों में । पिछले १०-११ वर्ष से मुझे अनेक भयंकर व्याधियों से गुजरना पड़ा और मैं महसूस करता हूं कि यदि सुप्रीम सर्जन से मेरी दोस्ती न हुई होती तो मेरे शरीर की दुर्दशा हो गयी होती । जब भी मुझे कोई असहनीय पीड़ा होती तो मैं अपने परम मित्र को कहता—दोस्त... मेरा ये दर्द आपको भी तो होता होगा... और खुदा-दोस्त क्षणभर में मेरा दर्द हर लेता था । कुछ भी होता तो मैं अपने मन के मीत को बुला भेजता और कहता, दोस्त... करो अब कुछ... और वह सदा ही मुझसे सच्ची दोस्ती निभाता, किसी-न-किसी को भेजकर उपचार करा देता ।

सचमुच भगवान इस धरा पर रूहों का सच्चा दोस्त बनकर आया है । वह अधिक-से-अधिक दोस्ती निभा रहा है और क्या हम विवेकशील रूहें उसकी दोस्ती का सम्पूर्ण लाभ उठा रही हैं ? क्या हम भी उससे सम्पूर्ण दोस्ती निभा रहे हैं ? या जैसे सुदामा की पत्नी उसे बार-बार कहती थी कि तुम्हारा दोस्त द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण है, उसके पास जाओ, वह अवश्य ही तुम्हारी मदद करेंगे, परंतु सुदामा तैयार न होता था । तो ऐसा तो नहीं कि किसी भी कारणवश हम भगवान की इस दोस्ती को भूले हुये हैं । और ऐसा न हो कि अंते वह कहे कि मैंने तो तुम्हारे लिये द्वार खोलकर रखे थे, परंतु तुमने मेरी दोस्ती का लाभ नहीं उठाया ।

उस परम मित्र ने आकर हमारे मन को सम्पूर्ण सुख दिया है । वायदा किया है—"तुम केवल मेरी याद में रहो, बाकि तुम्हें तन, मन, धन से ठीक रखना मेरा काम।" तो हमें स्वयं से पूछना है कि क्या ऐसा दोस्त चारों युगों में हमें अन्यत्र कहीं मिलेगा ! और वह भी ऐसा दोस्त जो स्वयं चलकर हमारे पास आया हो, जो रोज अमृतवेले सर्व-खजाने लेकर हमारा द्वार खटखटाता हो, जो हर परिस्थिति से उबारकर हमारे कष्ट हर लेता हो । ऐसे दोस्त को पाकर हम रूहें धन्य हो उठी हैं । अपने ही भाग्य को सराहने के लिए शब्द भी हम खोज नहीं पाते ।

लोगों के लिए कल्पना और हमारे लिए अनुभव—जबसे हमें इस दोस्ती का एहसास हुआ, परस्पर पहचान बढ़ी और हम एक-दूसरे के अधिक समीप आ गये । अब हम दोनों मित्र दो नहीं एक हो गये । उसने हमें भी इस प्यार में वे ही अधिकार दे डाले जो अब तक उनके ही पास सुरक्षित थे और कहा कि इन अधिकारों व वरदानों का प्रयोग मनुष्यों को सुख देने में करो । तो हमें विचार करना है कि इस दोस्ती को आगे कैसे बढ़ाएं ! इस दोस्ती का हमें कैसे नशा हो और क्या चिंतन करें—कुछ अनुभवगम्य विचार यहां प्रस्तुत हैं।

सर्वप्रथम तो हम यह मन से स्वीकार कर लें कि भगवान हमारा सच्चा दोस्त है और प्रतिज्ञा कर लें कि हे मेरे मन के मीत, हे मेरे दिल के गीत, बस इस दिल में तुझे ही बसायेंगे... हमारा सम्पूर्ण प्यार तुम पर समर्पित है... हम तुमसे पूरी दोस्त निभायेंगे... और आंख खुलते ही प्यार से ओतप्रोत होकर कहें—मेरे सच्चे दोस्त, गुडमॉर्निंग—मन अवश्य ही आनंदों में हिलौरे लेने लगेगा । और फिर इस प्रकार अपने चिंतन को दिशा दें—

मेरी ज़िन्दगी में रस भरने वाले खुदा-दोस्त... कभी कल्पना भी नहीं की थी कि तुम मेरी जिन्दगी में मेरे परम मित्र बनकर आओगे... तुम मुझसे दोस्ती निभाओगे... तुम मुझे अपने पुनीत प्यार में समा लोगे... दोस्त,तुमने कैसे मुझे पसन्द करके मुझसे दोस्ती कर ली... मुझे तुम्हारी दोस्ती पर गर्व है... मैं अवश्य ही तुम्हारे इस प्यार का रिटर्न दूंगा... मैं निस्संदेह आपको

गोरांवित करूंगा... । तुम् मेरा साथ निभाते हो—मुझे एहसास है । तुम छाया की तरह मेरे साथ रहकर शीतलता प्रदान करते हो—मुझे अनुभव है । तुम मेरा प्रत्येक संकल्प पूर्ण करते हो—मुझे ज्ञात है । हे मेरे सच्चे मीत... मैं भी आपके सभी संकल्प पूर्ण करूंगा... ।

हम सभी जानते हैं कि योग-युक्त होने के लिए परमपिता से सच्चा प्यार होना आवश्यक है । और यह भी सर्वविदित है कि प्यार सम्बंध के आधार पर ही बढ़ता है । और उन्हीं के शब्दों में—"बाप से एक भी सम्बंध पूर्णतया जोड़ने से सर्व सम्बंधों का रस स्वत: ही प्राप्त हो जाता है।" तो आज से भगवान को अपना दोस्त बना लो । बस, वही सब-कुछ हो, वही प्राणाधार हो, वही संसार हो । इस मित्रता का हमें सम्पूर्ण नशा भी हो । जैसे यदि किसी का मित्र प्रधानमंत्री हो तो उसे कितना नशा होगा । वह दूसरों को भी कहेगा, आप चिंता न करना, प्रधानमंत्री हमारा अपना आदमी है, सब-कुछ ठीक हो जायेगा । और हम विचार करें—"भगवान हमारा अपना है"—तो क्या हमें स्वप्न में भी चिंता करने की आवश्यकता है।

तो इस दोस्ती के सम्बंध के लिए इस प्रकार चिंतन करें—

●हम तो भगवान को जानते भी नहीं थे । अब उसने ही आकर हमसे दोस्ती का हाथ बढ़ाया और कहा—आओ मेरे दोस्त, तुम अब तक माया की तेज धूप में कहां भटक गये थे, आओ अब मेरी शीतल छाया में विश्राम करो । और हमने उनका आग्रह स्वीकार कर लिया । जब भी कोई किसी-से दोस्ती करता है तो २ बातें देखता है—एक समानता व दूसरी योग्यता । तो भगवान ने भी हमें अपने समान समझा व योग्य भी देखा । तो आओ, हम इस स्वमान में स्थित हो जाएं कि "हम भगवान के समान हैं ।" हम समान भी प्रत्येक बात में हैं । गुणों में भी समान, शक्तियों में भी समान तथा अधिकारों में भी समान । यह स्वमान हमें समानता की ओर ले चलेगा ।

●दो मित्र अर्थात् दो सच्चे दिल । यदि हमारे दिल में पूर्ण सच्चाई नहीं होगी या हमारे दिल में कोई अन्य बसता होगा या हमारे दिल में तनिक भी अशुद्धि होगी तो यह मित्रता ज्यादा दिन तक नहीं टिक पायेगी । तो जैसे हमारे परम मित्र का दिल पूर्णतया विशुद्ध है, वैसा ही हमारा भी हो । अन्यथा हम इस मित्रता का आनंद नहीं उठा पायेंगे ।

●हम विचार करें कि वह परम मित्र हमारे लिए क्या-क्या कर रहा है ? वह हमारे लिए अधिक-से-अधिक वह सब-कुछ कर रहा है, जो इस विश्व ड्रामा विधान के अनुसार उसके लिए सम्भव है । तो हम भी अपने से पूछें कि हम अपने परम मित्र के लिए क्या कर रहे हैं ?

●एक सच्चा मित्र वही करता है जो उसका मित्र चाहता है । हमारा खुदा-दोस्त तो वह सब-कुछ कर रहा है जो हमारी जन्म-जन्म की चाहना थी । तो क्या हम भी वही कर रहे हैं जो हमारे सच्चे मित्र की हमसे चाहना है । यदि हम तो उससे कामनाएं करते रहेंगे परंतु स्वयं उसकी कामनाओं को पूर्ण नहीं करेंगे तो आखिर वह भी कहां तक हमारी सुनवाई करता रहेगा ।

●दो प्यारे मित्र सदा ही साथ रहना चाहते हैं । उसने तो वायदा किया है कि मैं सदा ही तुम्हारे साथ रहता हूं तो क्या हमने भी सदा उनके साथ रहने का संकल्प किया है ? यदि हम दोस्त तो बनायें खुदा को और साथ रहें किसी और के तो खुदा-दोस्त को कैसा लगेगा ! तो हम ऐसे परमप्रिय दोस्त के ही साथ रहें । यह स्वर्ण अवसर तो एक ही बार मिलता है । या सदा ही उसे नीचे बुलाकर अपने पास रखें । ऐसे प्यारे दोस्त को जाने ही न दें । सदा ही उससे बातें करते रहें और प्रत्येक बात पूछते रहें।

●मित्र सदा ही एक-दूसरे से हल्के (Frank) रहते हैं । इसलिए हम भी हल्के रहकर इस मित्रता का आनंद लूटते रहें। जो हल्के होंगे वही उड़-उड़कर इस मित्र से सर्वस्व अनुभूतियां करते रहेंगे ।

●एक ही बार भगवान दोस्त बनकर आया है और हमारे लिए सुंदर सौगात भी लाया है । हम उसे क्या सौगात देंगे। तो आओ खुदा-दोस्त को अपने विशुद्ध दिल की, निर्मल मन की व दिव्य जीवन की सौगात दें । यही सौगात ही उसे अतिप्रिय है।

●मित्रों का एक-दूसरे पर सम्पूर्ण अधिकार होता है । आवश्यकता पड़ने पर एक सच्चा मित्र दूसरे के लिए सर्वस्व कुर्बान करने को तैयार रहता है । तो हम भी ऐसा ही करें । उस परम मित्र ने भी कहा है—हे मेरे दोस्त—मुझ पर भी उसी तरह तुम्हारा अधिकार है । मैं तुम्हें यह अधिकार देता हूं, तुम इस अधिकार का प्रयोग करो ।

प्रतिदिन इस प्रकार का चिंतन हमारी इस दोस्ती को घनिष्ट करेगा । हमें इस दोस्ती का पूर्ण एहसास होगा, इसका नशा होगा । दिन प्रतिदिन हम इस दोस्ती के विभिन्न लाभ अनुभव करेंगे । "हमारी कठिनाइयां हमारा खुदा-दोस्त हर लेता है"—यह स्पष्ट आभास होने लगेगा । धीरे-धीरे यह भी अनुभव होता जाएगा कि विभिन्न परिस्थितियों में या अपनी स्थिति को अडोल बनाने में हम इस दोस्ती का कैसे लाभ उठायें।

इस प्रकार भगवान से जिसकी दोस्ती हो, समस्त विश्व ही

उसका दोस्त बन जाता है । कोई भी उसका शत्रु नहीं रहता । और क्योंकि भगवान स्वयं उसे सहयोग करता है, इसलिए समस्त विश्व व प्रकृति स्वत: ही उसके सहयोगी बन जाते हैं ।

तो आओ, आज से भगवान से पक्की दोस्ती कर लें और इस दोस्ती के आनंद में नृत्य करें... हमारी यह दोस्ती अमर रहे... इस दोस्ती को कोई भी मायावी बाण काट न सके । हमारी यह दोस्ती जन्म-जन्म भक्तो के लिए गायन का विषय बने... इस दोस्ती के मध्य कोई भी देहधारी न आये । तो यह खुदा की दोस्ती हमें परम सुख, सम्पूर्ण ईश्वरीय रस, अडोल व एकरस जीवन का अनुभव करायेगी । हम इस दोस्ती को इतना सुदृढ़ कर लें और हमें एक-दूसरे पर इतना विश्वास हो जाए ताकि विनाश की लपटों में जलती दुनिया को हम सुख, शांति व सहारे का आभास दे सकें । और हमारी इस दोस्ती पर सम्पूर्ण विश्वास कुर्बान हो। □

हास्य-व्यंग्य

"माफ़ कीजिए"

□ब्रह्माकुमार 'प्रकाश' गोकुलधाम, भोपाल

एक सेठ जी,
जिनका पेट, काफी बढ़ा हुआ था।
हाथ में बहीखाता,
नाक पर चश्मा चढ़ा हुआ था।

इत्तफाक से मैं
उनसे मिलने गया।
सोचा इन सेठजी को भी,
निमंत्रण दे आऊं।
इस शांति अभियान में,
इन्हें भी सहयोगी बनाऊं।

तनिक मुस्कराते हुए,
हाथ में साहित्य उठाते हुए।
ज्यों ही खुद को मैंने,
अंदर दाखिल किया,
कि नौकर ने ही पूछ लिया।

कहिए आपका क्या नाम है ?
क्या सेठजी से जरूरी काम है ?
ठहरिए अंदर मत जाइए...
निमंत्रण देना है तो मुझे ही दे जाइए !

मैंने सोचा ये नौकर तो,
मालिक से ज्यादा होशियार है।
बात इतनी गहराई से पूछ रहा है,
जैसे कोई थानेदार है ?

खैर मैंने उसे समझाते हुए,
कदम आगे बढ़ाया।
और धीरे-धीरे मैं,
सेठजी के करीब आया।

जाते ही मैंने उन्हें हंसकर नमस्कार किया,
परंतु पांच मिनट तक,
सेठजी ने उत्तर नहीं दिया।

उसके बाद उनकी तंद्रा टूटी,
उन्होंने बंद किया अपना लेखा।
और चश्में के नीचे-से,
झांकते हुए मुझे देखा।

वे ऐड़ी से चोटी तक,
मेरे हुलिये को देख बोले,
क्या चंदा लेना ही आप लोगों का काम है ?

मैंने कहा, माफ़ कीजिए,
हम चंदा लेने नहीं आए हैं।
हम तो आपको, शांति-संदेश,
देने आये हैं।

वो बोले भाई, मुझे बहुत शांति है,
मेरे पास चार-चार कारखाने, एअर-कंडीशन बंगले व कारे हैं।
ये सारी जनता जानती है,
और मुझे नगर सेठ मानती है।

शायद आपको मालूम नहीं था,
इसलिए आप भटक गए।
खैर, आप आ ही गये हैं तो,
ये पांच रुपये लेते जाइये।

और माफ कीजिए, ये शांति-संदेश,
किसी और को सुनाइए ! □

दो-पहलू

■ डॉ. बलदेव राज गुप्ता, किशनपुरा

छाया आज है तम जीवन में,
जीवन से हो रही खिलवाड़।
मानवता का निकला जनाज़ा,
दानवता रही पांव पसार।
नहीं रहा जीवन जग में,
मृत्यु का तांडव नर्तन है।
व्याकुल है हर मानव,
असुरक्षित जनजीवन है।
लुट रहे सुहाग निशदिन,
नदी खून की बहती है।
अराजकता का है साम्राज्य,
सत्ता रोती रहती है।
निर्दोष बने है दोषी,
कातिल संत कहाते हैं।
अहिंसा का देकर नारा,
मानव का खून बहाते हैं।
आशा थी जिन नेताओं-से,
जनता को पाने की इंसाफ़।
वोट लेकर हुए है चम्पत,
रिश्वत लेकर करते बात।
भाई-भतीजावाद चल रहा,
नहीं कीमत बुद्धिवानों की।
अनपढ़ बने है शिक्षामंत्री,
अफ़सर शाही धनवानों की।
धोखा, बेईमानी और भ्रष्टाचार,
यही है लोगों का आचार...।
कोयला, लोहा, सीमेंट, पत्थर,
चले गये काला बाज़ार।
जिनके चेहरे उजले जितने,
मन उतने ही काले हैं।
समाजसेवी जो कहते खुद को,
झगड़े उनके डाले हैं।
सारा विश्व बना है लंका,
घर-घर में रावण का है राज।
राम नाम का उठ गया लंगर,
हर मन में बसे हैं पांच विकार।
डूब गई है नैया धर्म की,
घोर कलियुग छाया है।

इसी समय शिव-पिता ने आकर,
ज्ञान का शंख बजाया है।
दूर हुआ है तम जीवन से,
सत्य का हुआ उजाला है।
हर नर को मिली है राहत,
नवयुग आनेवाला है।
मृत्यु का भय दूर हुआ,
स्व को आत्म-ज्ञान हुआ।
भाई-भाई की दृष्टि बन गई,
दूर देह-अभिमान हुआ।
उदित हुए हैं दैवी-गुण,
असुरता का हो रहा विनाश।
पी रहे हैं ज्ञानामृत सब,
नहीं विकारों की कोई आश।
अवतरित हुए हैं ब्रह्मा वत्स,
करने नवयुग का निर्माण।
अपने क्रियात्मिक जीवन से,
सिखलाते कर्मों का ज्ञान।
पवित्रता का लेकर झंडा,
दिव्यगुणों की ले मशाल।
जन-जन को पावन बनाते,
ज्ञान से करते मालामाल।
न कोई आश है, मान मर्तबे की,
न भ्रष्टाचार न रिश्वत लेते।
निस्वार्थ सेवा लक्ष्य है इनका,
रूहानी स्नेह जन-जन को देते।
सहनशीलता त्याग-तपस्या,
सेवा निर्माण निर्विकार।
क्षमा धैर्यता और संतुष्टि,
यही है जीवन का शृंगार।
नहीं रहेगा दीन-दुखी अब,
न कोई होगा भ्रष्टाचार।
विश्व बनेगा पावन अब,
दुष्टों का होगा संहार।
एक तरफ विनाश की ज्वाला,
दूसरी तरफ स्थापना के नगारे।
दोनों कार्य हो रहे हैं गुप्त,
यह कहते हमको बाबा प्यारे।
विनाश होगा इस कलियुग का,
अब नया सवेरा आयेगा।
सम्पूर्ण अहिंसक होगा मानव,
विश्व स्वर्ग कहलायेगा। □

"चरित्रवान समाज के सृजन में तत्पर— अनोखा विश्वविद्यालय"

ब्रह्माकुमारी अवधेश, राजयोग भवन, भोपाल

मानवीय सभ्यता व संस्कृति के विकास के साथ ही सारे विश्व का इतिहास, ज्ञान एवं विज्ञान भी चरमोत्कर्ष पर पहुच गया है। शिक्षा के दृष्टिकोण से सारे विश्व की सत्ताएं अति आधुनिक, समुन्नत शिक्षा-प्रणालियों तथा शिक्षण साधनों का प्रयोग कर रही हैं । भारत देश भी शिक्षा के विकास में कोई पीछे नहीं है । उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि जहां गांवों व पिछड़े क्षेत्रों में कभी पढ़ाई की ओर कोई ध्यान नहीं देता था, शत-प्रतिशत निरक्षरता थी वहां जगह-जगह विद्यालयों की स्थापना हुई है तथा अधिकाधिक जनसमूह साक्षर होता जा रहा है।

परंतु यहां विचारणीय बात यह है कि शिक्षा श्रेष्ठ विचार व संस्कृति के निर्माण का सशक्त माध्यम होते हुए भी वर्तमान समाज में युवकों तथा बालकों में अनुशासनहीनता व चरित्र-हीनता क्यों पनप रही है ? देश दिन-प्रतिदिन भ्रष्टाचार, व्यभिचार,घूसखोरी, चोरी व मिलावट का शिकार बनकर पतन की गर्त में गिरता जा रहा है । यह विडम्बना उस देश की है जिसे चरित्रभूमि या देवभूमि कहा जाता था जो आज भी आध्यात्म का पिता माना जाता है । तो आइए, कुछ संदर्भित बिंदुओं पर प्रकाश डालें:—

१. वर्तमान शुष्क शिक्षाप्रणाली:—आधुनिक शिक्षा विधि में यह देखने में आता है कि विद्यार्थी को प्रारम्भिक काल से ही विज्ञान व आधुनिक गणित जैसे अनेक विषयों का उच्चस्तरीय ज्ञान तो करा दिया जाता है जिससे उसका बौद्धिक स्तर तो ऊंचा उठ जाता है लेकिन इस अध्ययन से वह व्याव-हारिक जीवन की सहजता और मौलिकता से वंचित रह जाता है। सदाचार व शिष्टता के नाम पर आधुनिक विद्यार्थी शून्य ही पाया जाता है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण स्कूल-कॉलेजों में आए दिन होने वाले दंगों, मारपीट, गुरुजनों व अभिभावकों के साथ अभद्रता व अनुशासनहीनता के रूप में दिखाई देती है । जीवन की शालीनता सामाजिक मर्यादा, व मानवं मन की सहृदयता का बोध आधुनिक शुष्क शिक्षानीति में नहीं है क्योंकि उसमें नैतिक शिक्षा के मूल्यवान विषय की पूर्णरूपेण उपेक्षा कर दी गई है । अतएव आधुनिक शिक्षा से दीक्षित राज्याधिकारी, अधिकारी या कर्मचारी प्राय: सभी भ्रष्टता व अनुशासनहीनता करते पाये जाते हैं ।

२. शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य क्या है ?:— प्राचीन काल में भी गुरूकुलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी को धर्म व नीति की शिक्षा दी जाती थी । उनमें सामाजिक मर्यादा व व्यवहार-कुशलता होती थी, कर्तव्य का पालन, वचनबद्धता, गुरुजनों व बड़ों का आदर तथा निर्बल की रक्षा करना ये सभी उनके मूल सूत्र होते थे । परंतु इस भौतिक युग में पला विद्यार्थी तो अश्लील फैशन, चलचित्र, दुर्व्यसनों व हिंसात्मक कुकृत्यों का शिकार है । उसमें कर्तव्य पलायन, मिथ्याचार, कृत्रिमता व निष्ठुरता पनप रही है या फिर भौतिक इच्छाओं की अपूर्ति से हीनता व कुण्ठा जागृत हो रही है। भला सोचिए, समाज व राष्ट्र का यह होनहार युवक जो स्वयं ही अंदर से खोखला है, वासनाओं में लिप्त है, समाज को व मानव जगत को क्या दे सकेगा ! तो क्या शिक्षा का उद्देश्य मात्र पढ़-लिखकर रोजी-रोटी कमा लेना व पेट भर लेने तक ही सीमित है ? फिर तो मनुष्य और पशुओं के जीवन में कोई अंतर ही नहीं । क्योंकि पेट भरना तो वे भी जानते हैं ।

इस प्रकार गहराई से यदि विचार करें तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि वर्तमान शिक्षा में सुधार आवश्यक है। "क्योंकि शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य तो सद्बुद्धि व सच्चरित्रता लाना है, मनुष्य सुसभ्य और सुसंस्कृत बनाना है, व्यवहार-कुशल बनाना है न कि सिर्फ पेट भरना।"

३. नैतिकता नहीं तो अध्ययन अधूरा है:—इति-हास साक्षी है कि संसार के महान से महान राजनेताओं, धर्म-नेताओं या पूंजीपतियों के पतन का कारण चरित्रहीनता व अनैतिकता ही बना है । अतएव यह बात स्पष्ट है कि अनेक प्रकार की पुस्तकों को पढ़कर कोई कितना भी विद्वान, धनवान या यशस्वी क्यों न बन जाए परंतु यदि उसका चरित्र श्रेष्ठ नहीं

है, उसमें आत्मीयता व नैतिकता नहीं है तो जैसे उसका जीवन व भविष्य ''रेत की ढ़ेर पर बनी इमारत'' की तरह है जो कभी भी ढह सकती है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि अब तक धर्मनेताओं, राजनेताओं व ऋषि-मनीषियों का अधोपतन चरित्रहीनता अथवा नैतिकृता की कमी के कारण ही हुआ है । अतएव यदि ज्ञान-विज्ञान या धर्मशास्त्र पढ़कर भी नैतिकता नहीं आयी तो अध्ययन अधूरा है।

४. स्वस्थ मनोदिशा व विचारधारा का आधार नैतिक शिक्षा:— बालकों व युवकों को प्रारम्भ से नैतिक शिक्षा दी जाए तो उनकी मनोदिशा व विचारधारा स्वस्थ और सात्विक बन सकती है । मनुष्यों के विचारों का ही उसकी जीवनशैली व समाज पर प्रभाव पड़ता है, अत: चरित्रवान समाज के निर्माण हेतु नैतिक शिक्षा की परम आवश्यकता है क्योंकि नैतिक शिक्षा मनुष्य के धर्म और कर्म, अधिकार व कर्त्तव्य, आचार-विचार, विहार और व्यवहार में संतुलन व सात्विकता का संचार कर उसके श्रेष्ठ चरित्र व चित्र का निर्माण करती है। इस भांति बचपन से ही दया, प्रेम, क्षमा, शीलता, सहयोग व सद्भाव के गुण बच्चों के विचारों में संस्कारित किये जा सकते हैं ।

५. सत्यता व निर्भयता का आधार नैतिक शिक्षा है:—यदि गहराई से विचार करें तो जीवन में सत्यता व निर्भयता की शक्ति अपनाना बहुत बड़ी बात है। परंतु नैतिक शिक्षा बचपन से हमारे संस्कारों को सहज, निर्मल व सशक्त बनाती है । हमारे मनोबल को बहुत ऊंचा कर देती है अत: सत्यता व निर्भयता जैसी महान शक्तियां स्वत: ही नैतिक शिक्षा के माध्यम से आ जाती हैं । निर्भय व सत्यवान व्यक्ति की ही संसार में विजय होती है । कहा भी जाता है ''सत्यमेव जयते।''

६. सच्ची नैतिकता के लिए आध्यात्मिक ज्ञान आवश्यक है:—आध्यात्म का अर्थ ही है आत्मा का अध्ययन या आत्म-ज्ञान । आज का मनुष्य विपरीत बुद्धि व भ्रष्ट हो गया है । उसका मूल कारण है कि वह अपने को देह समझ उस स्मृति में ही इंद्रियों के वशीभूत हो हर कर्म कर रहा है । उसने स्वयं के वास्तविक (आत्मिक) स्वरूप व स्वयं की शक्तियों को सही ढंग-से नहीं जाना है।

हम जो कुछ भी सोचते, बोलते या कर्म करते हैं अथवा परस्पर व्यवहार करते हैं वह सब मर्यादित, अनुशासित व परिशुद्ध होना ही नैतिकता है । पुनश्च उक्त सभी मानवीय कृत्यों का सीधा सम्बंध हमारी आत्मा से है। आत्मा की तीन सूक्ष्म शक्तियां होती हैं जिन्हें मन, बुद्धि, संस्कार कहा जाता है तथा जो क्रमश: विचार, विवेक व कर्म की स्मृति को व्यक्त करती है। अतएव किसी को नैतिक बनाने या उसका चरित्र निर्माण करने हेतु उस अमुक व्यक्ति (आत्मा) की स्मृति, वृत्ति व दृष्टि का परिवर्तन करने की प्रथम आवश्यकता है । इन मौलिक व सूक्ष्म बातों पर किसी भी नैतिक शिक्षण संस्था या आधुनिक चरित्र उत्थान सिमितियों का ध्यान ही नहीं है । कारण कि वे स्वत: नैतिकता के यथार्थ भाव से अनभिज्ञ हैं । अतएव वर्तमान समय सरकार द्वारा अनेक बाल सुधार व नारी सुधार केंद्र तो खोल दिए गए हैं या अन्य समाज-सुधारक संस्थाएं भी दुर्व्यसनों व कुरीतियों से मानवों को मुक्ति दिलाने में तो लगी हैं तथा डाकुओं, वेश्याओं आदि का समर्पण भी वे करा लेते हैं तथापि देखने में आता है कि वे बालक, नारियां, या डाकू पुन: उस मार्ग पर चल पड़ते हैं ।

कारण यह है कि वातावरण का प्रभाव व साधनों की प्राप्ति के लोभवश बाहय रूप से बुराइयों को छोड़ने का संकल्प तो अवश्य कर लेते हैं तथापि उनकी उत्पत्ति का यथार्थ कारण न मालूम होने व विचार परिवर्तन व मनोबल की शक्ति की कमी के कारण वह मानसिक रूप से या वैचारिक तल पर अमुक दुर्गुण व्यसन या विकार का त्याग नहीं कर पाते। अत: ऐसे लोगों में कोई भी बुराई छोड़ने के बाद भी उनमें मानसिक रूगणता व दुर्बलता बनी रहती है । जो कभी भी उन्हें उसी अनैतिक मार्ग पर वापस ले जाती है ।

अतएव यह स्पष्ट है कि मनुष्य का सच्चा चरित्र निर्माण करने हेतु उसमें वैचारिक परिवर्तन आवश्यक है तथा उसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान व सहज राजयोग का नित्य अभ्यास जरूरी है । क्योंकि आध्यात्मिक ज्ञान हमें स्व अर्थात् आत्मा की यथार्थता व जीवन के वास्तविक उद्देश्य का ज्ञान कराता है तथा राजयोग द्वारा हम आत्मानुभूति व परमात्मानुभूति में स्थित होते हुए मानसिक स्थिरता या एकाग्रता को प्राप्त कर लेते हैं । राजयोग हमारी मानसिक संकीर्णता, तनावों एवं मनोरोगों को समाप्त कर हमारे में आध्यात्मिक व बौद्धिक शक्ति का विकास करता है।

फलत: जीवन व व्यवहार में हमारे अंदर निर्णय शक्ति, परख शक्ति, सहनशक्ति, समाने की शक्ति आदि महत्वपूर्ण शक्तियों का विकास होता है जिनसे हम स्वयं के मन व बुद्धि सहित शरीर की समस्त कर्मेंद्रियों को अपने अनुसार चला सकते हैं । दूसरें शब्दों में आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग की साधना से हमारी स्थिति, स्मृति, दृष्टि वृत्ति व कृत्ति सभी श्रेष्ठ व पवित्र बन जाते हैं ।

इस प्रकार हमारी आर्थिक, शारीरिक व मानसिक शक्तियों का व्यर्थ अपव्यय व क्षय रुक जाता है । यही जीवन का आदर्श स्वरूप है व सच्ची नैतिकता है । उपरोक्त विधि व विधान का ज्ञान मानव बुद्धि से परे है । अतएव वर्तमान समय स्वयं ज्ञान सागर व शक्ति स्रोत परमात्मा शिव जो कि आध्यात्म के पिता कहे जाते हैं तथा परम योगेश्वर हैं, आकर साकार माध्यम द्वारा अमुक ज्ञान व राजयोग की बहुमूल्य शिक्षा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के माध्यम से दे रहे हैं । तदनुसार सारा मानव जगत एक परिवार है, हम सभी परमात्मा की संतान अविनाशी बिंदु रूप आत्माएं आपस में भाई-भाई हैं । जिसका यथावत व्यावहारिक स्वरूप, विश्वविद्यालय में देखने को मिलता है । जहां जाति, धर्म, भाषा, रंगभेद, पद, धन की सीमाओं से परे लाखों नर-नारी, बालक युवा व वृद्ध हर वर्ग के लोग परस्पर आत्मीयता, सौहार्द्रता व सहिष्णुता से संगठित जीवन यापन कर रहे हैं। उनका आहार, विहार, विचार, व व्यवहार सभी सात्विक व श्रेष्ठ हैं । उनके जीवन चरित्र के महान चित्रों को देखा जा सकता है।

सार रूप में यह कहा जाना यथोचित होगा कि वर्तमान अनीतिपूर्ण व नैतिक अधोपतन के काल में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय सारे विश्व में एक अनोखे ढंग की सशक्त नैतिक शिक्षा का केंद्र बनकर उदित हुआ है । जिसकी सशक्त एवं व्यवहारिक नैतिक व चारित्रिक शिक्षा द्वारा एक आदर्श देवतुल्य व चरित्रवान समाज का सृजन हो रहा है। अतएव जन सामान्य से आग्रह है कि वह विद्यालय की इस महत्वपूर्ण नैतिक जागृति के कार्य को प्रभावी बनाने में सहयोग दें । तदर्थ राजयोग व आध्यात्मिक ज्ञान का लाभ उठाएं, तथा दूसरों को भी प्रेरित कर श्रेष्ठ भारत का नव-निर्माण करें। □

अम्बाला शहर में पार्क में प्रदर्शनी देखने आये हरियाना के राजस्व मंत्री भ्राता निर्मल सिंह जी को ब्र.कु. सरोज ईश्वरीय सौगात देते हुए।

दिल्ली (मजलिस पार्क) : शिव जयन्ती समारोह में मंच पर दादी बी.के. हृदय मोहिनी जी, बी.के. अमृता, बी.के. सत्यवती तथा भ्राता दुआ जी बैठे हैं।

बैंगलोर शिवरात्री के अवसर पर बैंगलूर महापालिका के महापौर श्री बी.वी. पुट गावडा का ब्रह्माकुमारी बहनें स्वागत करती हुई दिखाई दे रही है।

सीकर सेवा केन्द्र की ओर से प्रदर्शनी का उदघाटन करते हुए राजस्थान के ऊर्जा मंत्री भ्राता हीरा लाल देवपुरा जी।

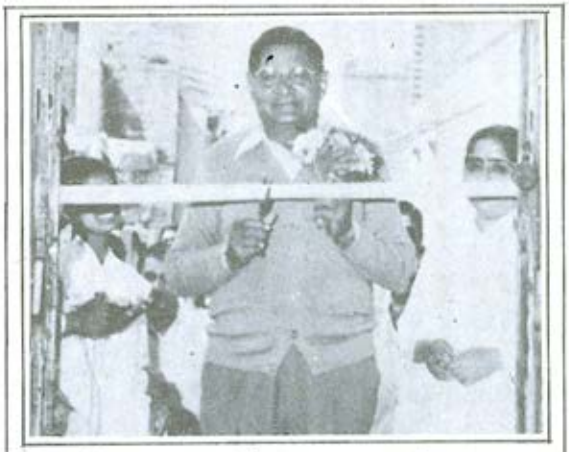

बल्लाभगढ़ : प्रदर्शनी का उद्घाटन शहर के प्रसिद्ध व्यक्ति डॉ. चन्द्रसेन जी कर रहे हैं।

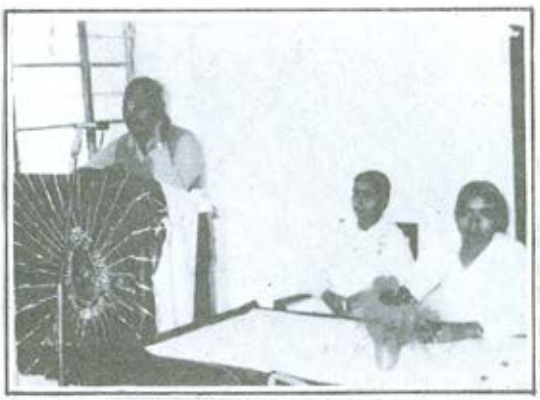

एलनाबाद : एक आध्यात्मिक प्रोग्राम में हेडमास्टर जी धन्यवाद देते हुए तथा मंच पर ब्र.कु. प्रमोद जी व अन्य बहन बैठी हैं।

पुरी में शिव ध्वजा लहराने के पश्चात अतिथिगण व ब्र.कु. बहनें व भाई दिखाई दे रहे हैं।

पृष्ठ ३२ का शेष

गोरखपुर: शिवरात्रि के पावन पर्व पर यहां के नामी-ग्रामी विष्णु मंदिर में सुबह अमृतवेले से रात्रि ९ बजे तक प्रदर्शनी का कार्यक्रम चला जिसको हज़ारों शिव भक्तों ने देखा तथा लाभ लिया। इस प्रदर्शनी द्वारा कई स्थानों से निमंत्रण भी मिले हैं। □

भरतपुर: समाचार मिला है कि भरतपुर सेवाकेंद्र द्वारा शिवरात्रि महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया। पूरे शहर में ईश्वरीय संदेश के पर्चे वितरित किये गये। सम्पूर्ण शहर में बाजे के साथ प्रभातफेरी निकाली गई। सायंकाल सेवाकेंद्र भवन पर गीत, प्रवचन एवं चित्र प्रदर्शनी का सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भ्राता के.एन. पाठक, अध्यक्ष सिमको लि. भरतपुर द्वारा की गई। भ्राता रमेशचंद्र सूद ज़िला जज, भरतपुर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। □

नवसारी: त्रिमूर्ति शिव जयंति निमित जन-जन को शिवबाबा का संदेश देने हेतु १८ फरवरी से २६ फरवरी तक नवसारी सेवाकेंद्र से सम्बंधित गीता पाठशालाओं में तथा गांवों में एवं कुछेक जिज्ञासु भाई-बहनों के घरों में बाबा का झंडा लहराया गया तथा सब जगह प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। इसके अलावा नवसारी शहर के प्रतिष्ठित स्थान लक्ष्मण हॉल में ''सर्वधर्म सम्मेलन'' का आयोजन किया गया जिसमें सभी धर्मों के वक्तागण पधारे थे। ब्र.कु. बहनों ने परमपिता परमात्मा के अवतरण के रहस्य को स्पष्ट किया। इस प्रोग्राम द्वारा अनेक आत्माओं को शिवबाबा का संदेश मिला। □

दिल्ली (लारेंस रोड): सेवाकेंद्र द्वारा होली के पर्व पर एक विशेष समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रवचन, गीत, बाल नृत्य इत्यादि कार्यक्रमों द्वारा मनुष्य-आत्माओं को शिवबाबा का संदेश दिया गया।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सेवाकेंद्रों से भी उत्साहवर्द्धक शिव जयंती के पावन पर्व पर की गई, ईश्वरीय सेवा का समाचार मिला है।

जैसे सिद्धपुर, पूना (शांति कुंज), कोल्हापुर, बंगलौर, झांसी, छत्तरपुर, जलाना, कवाली, गाजियाबाद (लोहिया नगर), पठानकोटा, सिकन्दराबाद (यू.पी.) बीदर, विसनगर, मोंगा, शिमला, मिदनापुर, मैसूर, मंडी (हि.प्र.), सिलीगुरी, पाटन, फिलौर, ग्वालियर, अम्बाला सीटी, मान्सा, जटनी, गुरदासपुर, परतवाड़ा, उदयगिरि, आदमपुर, उटाकमंड, विलीमोरा, तोशाम, जगाधरी अकबरपुर, हनुमानगढ़, आदि-आदि। □

अन्ते या मति सा एव गति

मनुष्य जैसा करता है वैसा ही वह उसका फल भोगता है—यह एक प्रसिद्ध कहावत है। परन्तु वह किस रूप में अपने कर्म का फल भोगता है, इस विषय में लोगों के भिन्न-भिन्न मत हैं। कई लोग तो मानते हैं कि मनुष्य अपने कर्म का फल अनेक योनियों में जन्म लेकर भोगता है, कुछ दूसरे लोग कहते हैं कि इस जन्म के बाद 'रूह कबर-दाखिल हो जाती है' और अन्त में कयामत के समय खुदा (परमात्मा) आकर उसके कर्मों का फल उसे देते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि 'पाप' और 'पुण्य' नाम की अथवा 'अच्छाई' और 'बुराई' नाम की कोई चीज़ ही नहीं है। परन्तु यह तो साधारण विवेक की बात है कि अगर पाप और पुण्य में कोई भेद ही न हो और पुनर्जन्म होता ही न हो तो हम एक निरपराध और सभ्य समाज की ओर बढ़ ही नहीं सकते और कोई भी सरकारी कानून या अन्यान्य नियम-उपनियम निर्धारित ही नहीं कर सकते; न ही जीवन में सद्व्यवहार या शिष्टाचार आदि को निश्चित कर सकते हैं। पुनश्च, जब आप किसी मानव-शिशु को निर्धन के घर में पैदा हुआ देखते हैं अथवा किसी मनुष्य में कोई रोग, शोक, दुर्घटना, हानि-लाभ आदि देखते हैं तो कर्म और पुनर्जन्म के सिवा आप उनका दूसरा कोई कारण कभी बता ही नहीं सकेंगे। अतः संक्षेप में यह निश्चित कर लेने के बाद कि कर्म का फल तो कर्त्ता को इसी जन्म में या अन्य किसी जन्म में भोगना ही पड़ता है, अब हम इस बात पर विचार करेंगे कि उसे भोगने के लिये योनि-परिवर्तन आवश्यक है या कुछ अन्य परिवर्तन ?

उक्ति प्रसिद्ध है कि शरीर छोड़ते समय मनुष्य की जैसी मति होती है वैसी ही उसकी गति होती है। इसका अर्थ कई लोग यह ले लेते हैं कि मरते समय मनुष्य के संस्कार जिस-किसी पशु, पक्षी, कीट, पतंग आदि जैसे हों अथवा उसने विकर्म कुकर्म, घोर कर्म या जैसे भी पाप कर्म आदि किये हों उसको तदनुसार ही योनि मिलती है। परन्तु वास्तव में योनि-परिवर्तन की मान्यता सत्य नहीं है।

परमपिता परमात्मा शिव, जो ही कर्मों की गुह्य गति को तथा जन्म-मरण के चक्कर को जानने वाले हैं, अब समझा रहे हैं कि कर्मों का फल भोगने के लिये मनुष्य का योनि-परिवर्तन नहीं होता बल्कि चोला परिवर्तन (काया-परिवर्तन), कुटम्ब-परिवार परिवर्तन, स्थिति-परिस्थिति, सम्बन्ध और स्थान परिवर्तन, आयु और आय परिवर्तन, संस्कार और विचार परिवर्तन आदि-आदि परिवर्तन होते हैं।

उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि एक मनुष्य अपने जीवन में काम क्रोध आदि विकारों के वशीभूत होकर कर्म करता रहा है। वह लोगों पर अत्याचार करता रहा है और लूट-खसूट मचा कर दूसरों के अधिकार छीनता रहा है। इसके परिणाम स्वरूप उसके अन्त समय में अथवा मृत्यु काल में भी सचेत या अर्धचेत अवस्था में उसके स्मृति-पट पर उसके किये हुए कर्मों अथवा जीवन-वृत्तान्तों के भयप्रद चित्र एक-एक करके उसके सामने आते रहेंगे और उसे उनके कारण मानसिक दुःख तथा अत्यन्त अशान्ति का अनुभव होगा। कुछ क्षणों में ही उसके मन की आँखों के सामने उसके जीवन-वृत्त की फिल्म घूम जायेगी और उन क्षणों में उनका जाने कितने दीर्घकाल का दुःख अनुभव होगा। कहने का भाव यह है कि अन्त समय भी उसकी वैसी मति होगी जैसे कि प्रायः उसके जीवन-काल में रही होगी। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह अगले जन्म में सिंह आदि किसी हिंसक पशु की

योनि में जन्म लेगा बल्कि उसकी हिंसा वृत्ति, अत्याचारी स्वभाव, दूसरों का अधिकार हड़पने की टेव आदि-आदि संस्कार उसे एक अपठित, असभ्य, अपराध-प्रिय, दुःखी, अशान्त, डाकू या चोर के परिवार में ले जाएगा क्योंकि अपने किये हुए कर्मों का फल दुःख, अशान्ति, सामाजिक तिरस्कार, अपमान आदि के रूप में वह वहीं प्राप्त कर सकता है न कि सिंह आदि किसी हिंसक पशु के रूप में। उसने पूर्व जन्म में लोगों के घर, धन, धान्य आदि के लूटने के परिणामस्वरूप अब वह भी धन-धान्य एवं सुख-सुविधा रहित माता-पिता के यहाँ जन्म लेगा और जन्म से ही उसके संस्कार चंचल, स्वभाव आतंक-प्रिय, विचार म्लेछों-जैसे मालूम होंगे। इस प्रकार उसकी बुद्धि का परिवर्तन तो होगा अर्थात बुरे कर्मों के परिणामस्वरूप वह मलीन बुद्धि वाले शिशू के रूप में जन्म लेगा और कर्मों का दण्ड भोगने के लिए अब उसे काया, सम्बन्धी, वातावरण आदि-आदि तो नये मिलेंगे परन्तु उसका योनि-परिवर्तन नहीं होगा।

अतः अन्ते या मति स एव गति का यह भावार्थ नहीं है कि अन्तकाल में स्त्री को याद करने वाला मनुष्य कामी कुत्ते के रूप में जन्म लेता है या कोई हिन्सक वृत्ति वाला नर कोई चीता आदि हिंसक पशु बनता है बल्कि इस का भाव यह है कि मनुष्य के जैसे संस्कार और जैसी वृत्ति तथा बुद्धि (मति) उसके अन्त काल में होते हैं, वैसे ही उसे अगले मनुष्य-जन्म में मिलते हैं, उसे वैसे ही संगी-साथी प्रिय लगते हैं, वैसा ही खान-पान जचता है और दण्ड-विधान के अनुसार वह सुख-शान्ति रहित परिवार तथा स्थिति-परिस्थिति में जन्म लेता है।

इसी प्रकार, मान लीजिये कि कोई व्यक्ति दानी स्वभाव का है, वह जीवन-भर लोगों को वस्त्र, अन्न धन आदि दे कर अल्पकाल का सुख देता रहा है परन्तु साथ ही साथ वह अपने जीवन में प्रायः काम-भोग भी करता रहा है और क्रोध के वशीभूत होकर वह दीन-हीन, निर्बल अथवा अबोध मनुष्यों या बच्चों को मारता-पीटता भी रहा है तो अन्तकाल में उसके जीवन के ऐसे-ऐसे वृत्तान्त उसके मन की आंख के सामने आयेंगे और अपना दानी स्वभाव भी याद आयेगा और वह इन दोनों प्रकार की मति को लेकर ऐसे घर में जन्म लेगा जहां दान के फलस्वरूप उसे सुख प्राप्त होगा परन्तु वहाँ पूर्ण पवित्रता नहीं होगी। इस प्रकार, धन की दृष्टि से तो वह सुखी होगा परन्तु विकारी संस्कार अथवा स्वभाव होने के परिणामस्वरूप मन उसका अभी भी शान्त नहीं होगा। तथापि वह पशु-योनि में जन्म नहीं लेगा क्योंकि हर एक मनुष्यात्मा का मानुषी स्वभाव तो थोड़ा-बहुत रहता ही है।

अन्य कोई मनुष्य यदि भक्त है, प्रेम और स्नेह से अपने इष्ट श्रीकृष्ण की भक्ति करता है तो अन्त समय अर्थात मृत्यु के समय उसे अपने इष्ट की भी थोड़ी-बहुत स्मृति आयेगी ही परन्तु साथ-साथ उसके जीवन-व्यवहार में किये गये पाप भी स्मृत हो आयेंगे। वह दुकान पर कम तोलते समय जैसे डंडी मारा करता था, जीवन-भर वह जिस प्रकार मोह-ममता का कीड़ा बना रहा है, उसका चित्र भी उसकी आँखों के सामने घूम जायेगा सही। परन्तु वह इन संस्कारों-विचारों को ले कर अगला जन्म किसी पशु-पक्षी आदि के यहां नहीं लेगा बल्कि एक धनाड्य एवं समृद्धिशाली भक्त-बुद्धि माता-पिता के यहां लेगा और वो भी पूजा-पाठ, कथा-वार्त्ता आदि में रुचि रखते होंगे। इस प्रकार उसे भक्ति का भी फल मिलेगा परन्तु उसके पूर्व जन्म की संस्मृतियों तथा संस्कारों के परिणाम स्वरूप उसके स्वभाव में वह चंचलता, धोखेबाजी मोह-ममता, काम-वासना आदि भी रहेंगे ही। यह है भाव 'अन्ते या मति सा एव गति' की उक्ति का।

ज्ञानवान् मनुष्य की गति

प्रश्न पूछा जा सकता है कि ज्ञानवान् मनुष्य की क्या गति होती है ? हाँ इस बात को भी समझना बहुत आवश्यक है। संगम युग में परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा सहज ज्ञान और सहज राजयोग की जो शिक्षा देते हैं, वास्तव में वही सच्चे अर्थों में 'ज्ञान' तथा 'राजयोग' है। उसको धारण करने वाला, ब्रह्मचर्य व्रत तथा आहार-बिहार की शुद्धि आदि नियमों का पालन

करने वाला तथा काम, क्रोध आदि विकारों पर विजय प्राप्त करने का पुरुषार्थ करने वाला मनुष्य ही वास्तव में ज्ञानवान् अथवा योगाभ्यासी है।

यदि कोई ज्ञानवान् व्यक्ति इस मनुष्य-सृष्टि के आने वाले महाविनाश तक ज्ञान-योग का पुरुषार्थ करता ही रहेगा, दिव्य गुणों की धारणा में लगा ही रहेगा, नियमों का पालन करता ही रहेगा, ईश्वराज्ञा का पालन लग्न से करता ही रहेगा और योगाग्नि को अधिकाधिक तीव्रता से प्रज्वलित करके अपने पूर्व जन्मों के विकर्मों को दग्ध करता ही रहेगा तो उसकी मति और गति सर्वश्रेष्ठ होगी। जो व्यक्ति दूसरों की ज्ञान-सेवा करते हुए, अपना तन-मन-धन ईश्वरार्पण करके लोगों के कल्याण के लिये लगा रहता है, उसकी मति-गति का सर्वश्रेष्ठ होना तो स्वाभाविक ही है। ऐसे व्यक्ति के अन्तिम काल में, यद्यपि उसके सामने भयानक गृह-युद्ध हो रहे होंगे, उग्र रूप में प्राकृतिक प्रकोप भी हो, रहेंगे परन्तु फिर भी वह एक-रस आनन्दमय, साक्षी एवं योग-युक्त अवस्था में स्थित रहेगा। ऐसा अखण्ड योगी स्वेच्छा से अपना शरीर रूपी क्लेवर छोड़ कर सूक्ष्म लोक में ब्रह्मपुरी में जायेगा और वहाँ से परलोक अथवा मुक्तिधाम (Sweet Silence Home) में परमपिता परमात्मा शिव का सामीप्य प्राप्त करेगा। बाद में वह सतयुगी स्वर्गिक स्वराज्य में देवपद प्राप्त करके जन्म-जन्मान्तर सम्पूर्ण सुख का राज्य-भाग्य भोगेगा।

मान लीजिये कि ऐसा नर थोड़े-बहुत पुरुषार्थ से अपनी आत्मा को कुछ पावन बनाता तो है परन्तु अभी उसकी आत्मा की ज्योति पूरी तरह नहीं जगी होती कि उसके शरीर छोड़ने का समय आ पहुँचता है तो उसे अन्त समय में परमपिता परमात्मा की स्मृति भी आयेगी और साथ-साथ उसे अपने अपूर्ण पुरुषार्थ के लिये पश्चाताप भी रहेगा। वह सोचेगा कि मैंने अपने जीवन-काल में विकारों पर विजय प्राप्त करने का तथा ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग की धारणा का पूर्ण पुरुषार्थ नहीं किया! मेरा पुरुषार्थ ढीला रहा। मैंने आलस्य में, संशय या संकोच में, समय के टालमटोल में या ईश्वरीय आज्ञा के पालन की कोताही में अनमोल खज़ाना खो दिया मैंने तन-मन-धन से विशेष ईश्वरीय सेवा न की! तथापि उसे खुशी भी होगी कि मैंने संसार के अनेकानेक मनुष्यों की भेंट में अपना जीवन अच्छा और उच्च बना लिया, मैंने कुछ समय तो पवित्रता का व्रत-पालन किया, मैंने परमपिता से योग-युक्त होकर कुछ तो आनन्द रसपान किया। इस प्रकार, उसके मानस-पट पर संस्मृतियाँ आयेंगी और जब वह प्राण छोड़ेगा तो वह ये संस्कार अपने साथ ले जायेगा वह एक ऐसे माता-पिता के यहाँ जन्म लेगा जिन्हें आहार-बिहार के नियमों में तथा ईश्वर-चर्चा में कुछ रुचि होगी। यदि उनमें पहले ऐसी रुचि नहीं रही होगी तो उस ज्ञानवान् मनुष्यात्मा के उनके यहाँ जन्म होने के बाद उन्हें भी ज्ञान के प्रति कुछ चेष्टा होगी। तब वह ज्ञानवान् मनुष्य छोटी आयु से ही ईश्वरीय ज्ञान की ओर आकृष्ट होगा। यदि परमपिता परमात्मा शिव एवं त्रिदेव के चित्र या चित्रों वाला साहित्य अथवा निमंत्रण उसे कभी दिखाई देगा तो उसके प्रति मन में चाव उत्पन्न होगा, वह अपने माता-पिता को भी उस ओर खींच ले जायगा। वह फिर ईश्वरीय ज्ञान प्राप्त करेगा और योग का भी अभ्यास करेगा और उसे मुक्ति की प्राप्ति होगी तथा सतयुगी स्वर्गिक स्वराज्य में भी देवपद पायेगा।

इस प्रकार, कर्म और कर्म-फल के नियम को अथवा अन्ते या मति सा एव गति के नियम को जानकर तथा वर्तमान् संगम समय को पहचान कर अब हमें ईश्वरीय ज्ञान तथा योग का तत्परता से अभ्यास करना चाहिए।

मृत्यु

इस सृष्टि रूपी रंग-मंच पर दो चीज़ें सदैव सबके लिए होती हैं। एक है 'जन्म' और दूसरी 'मृत्यु'। जितना जन्म को जानना आवश्यक है उतना ही मृत्यु को भी जानना आवश्यक है। रवीन्द्र नाथ टैगोर ने भी मृत्यु के बारे में बताया है कि मृत्यु तो निद्राधीन मनुष्य को जगाने का एक अजब शंखनाद है। जिस दिन 'मृत्यु देव' तुम्हारे द्वार पर तुम्हें लेने के लिये आयेंगे तो तुम उसके चरणों पर कौन-सी भेंट रखोगे ? क्षणिक जीवन की मर्यादा मृत्यु दीप के प्रकाश में खत्म हो जायेगी तब तुम्हारे पास, हे पथिक, ऐसा कौन-सा वैभव है जिसे तुम जीवन के अन्तिम श्वास में देख सकोगे ?'

प्रश्न तो बहुत पुराना है परन्तु माया के बन्धन में जकड़ा हुआ मनुष्य इस प्रश्न को न जानने के कारण ऐसा समझने लगता है कि वह हमेशा के लिए इस सृष्टि-मंच पर अमर होकर आया है। परन्तु जीवन द्वार पर सदा मृत्यु रूपी ताला लगा ही हुआ है। जीवन का अन्तिम ध्येय है ही मृत्यु।

एक छोटी-सी कथा लोग प्रायः कहते हैं जोकि इस प्रसंग में इस भाव को स्पष्ट करती है कि मनुष्य पहले नशे में कैसे रहता है। कहते हैं कि एक दिन प्रातः के समय एक छोटी-सी लोमड़ी अपने नाशते के लिये शिकार की तलाश में निकली। सामान्य रीति से जंगल तो इतना घना होता है कि सूर्य की किरणें नीचे जमीन पर नहीं पहुँच सकतीं। परन्तु उस दिन वह एकान्त स्थान पर पहुँच गयी और वहाँ ज़मीन पर अपनी परछाई देखी। सूर्योदय हुआ ही था। सूर्य की क्षितिज-किरणों के कारण परछाई लम्बी पड़ रही थी। अपना इतना बड़ा प्रतिबिम्ब देखकर लोमड़ी सोचने लगी कि आज तो नाशते के लिए हाथी चाहिए और वह हाथी की तलाश में निकल पड़ी। दोपहर के बारह-एक बजे तक वह लोमड़ी भूखी घूमती रही परन्तु हाथी न मिला। उसी समय उसकी दृष्टि फिर-से अपनी परछाईं पर गई। तब उसने अपनी छोटी-सी परछाईं देखकर कहा कि 'अब तो एक चूहा भी काम दे जायेगा।'

मनुष्य भी ऐसा ही है। जीवन के सूर्योदय अर्थात प्रारम्भ में वह अपने नशे में रहता है। कहते हैं कि अमरीका में हरेक नये पैदा हुए बच्चे के लिए उसकी माँ यह इच्छा रखती है कि यह अमरीका का प्रधान बनेगा। इस नशे के कारण सामान्य व्यक्ति भी समझता है कि वह तो जो-कुछ चाहे कर सकता है। यौवन, धन, सम्पत्ति तथा प्रभुत्व के नशे में चूर मनुष्य की क्या गति होती है, वह तो सब सोचते होंगे ही। उन्हें कैसे ज्ञान की रोशनी दें ?

जिस प्रकार स्थूल वैभव का नशा होता है, उसी प्रकार कई लोगों को अपनी भक्ति, गुरु, शास्त्रों के ज्ञान आदि का नशा होता है। वे ऊपर वर्णन किये हुये नशे में चूर लोगों को ईश्वरीय, अलौकिक ज्ञानामृत पिलाने की कोशिश करते हैं। वे परमधाम से आये हुए पतितपावन परमप्रिय परमपिता परमात्मा का निजी सन्देश देने के लिए प्रयत्न करते हैं।

मृत्यु तो किसी को भी नहीं छोड़ती। मृत्यु और उसमें भी आज की यह अकाले मृत्यु सबके नशे चूर कर देती है। मृत्यु के बाद क्या गति होती है, मृत्यु के समय पर आत्मा शरीर से कैसे निकलती है या कोई मृत्यु के समय पर अचेत अवस्था में होता है तो क्या यह अचेतना शारीरिक भान से ही होती है या उसी समय आत्मा अन्दर कुछ भोगना भोग रही होती है, ये सब प्रश्न हैं। मृत्यु के पश्चात चाहे

लोग कहें कि 'स्वर्ग-वासी हुआ' परन्तु क्या वह वास्तव में स्वर्ग-वासी होता है ? ज्योति में ज्योति समाने की आशा रखने वाली आत्मा की क्या गति हुई ? धन और वैभव रूपी प्रारब्ध को भोगने वाली आत्मा को वह धन-वैभव मृत्यु के समय या मृत्यु के बाद क्या काम में आया—यह भी बहुत समझने की जरूरत है।

प्राय: शास्त्रों में इन सब बातों का कोई भी उत्तर भली भांति नहीं है। शास्त्रों में कुछ बातों को अनुमान ही से लिखा हुआ है। गरुड़ पुराण आदि में इन सब बातों का अस्पष्ट विवरण दिया हुआ है परन्तु वे सब अनुभव रूपी सत्यता से दूर होने के कारण अनुमान पर ही आधारित है। सर्व-सामान्य जनता को दण्ड की सावधानियाँ (Punitive threatenings) उसमें दी गई हैं जिससे कि सब न्याय, नीति तथा सत्यता के मार्ग पर ही चलें।

परमपिता परमात्मा तो हैं ही सर्वशक्तिमान। उन्हें 'दिव्य चक्षु-विधाता' भी कहा जाता है। शरीर छोड़ने के बाद मृतात्मा का अनुभव साक्षात्कार के सिवा अन्य किसी रीति से समझा या जाना ही नहीं जा सकता। भविष्य या भूत काल को सामान्य मनुष्य तो केवल शब्दों द्वारा बता सकेंगे परन्तु सर्वशक्तिमान् परमात्मा तो साक्षात्कार के द्वारा विशेष रूप से सभी बातों को अच्छी रीति से समझा सकते हैं। यदि इन सब बातों का पृथक्-करण (analysis) किया जाय तो वह इस प्रकार है—

१. सम्पूर्ण कर्मातीत—यह स्थूल शरीर भी कर्मों के हिसाब के अनुसार ही मिलता है। जैसा-जैसा कर्म किया होता है उसी प्रकार से सबको तन तथा तन का स्वास्थ्य, धन, वैभव तथा अन्य सुख के साधन मिलते हैं। बुरे कर्मों का बुरा फल तथा अच्छे कर्मों का अच्छा फल मिलता है। सब प्रकार के कर्मों का हिसाब-किताब तो चुकाना ही पड़ता है। पिछले जन्मों के विकर्म तथा वर्तमान जीवन के विकर्मों के कारण सिर पर बड़ा भारी बोझ है। यह बोझ या तो उनके फल को सहन करके समाप्त होगा या परमपिता परमात्मा द्वारा सिखाये जा रहे योग द्वारा समाप्त होगा। ज्ञान द्वारा सत्य कर्मों को बना कर तथा योग द्वारा विकर्मों को भस्म करके हम अपने भविष्य जीवन के लिए श्रेष्ठ प्रारब्ध बना सकते हैं।

कर्मातीत अवस्था को लोग अनेक प्रकार से समझते हैं। परन्तु सच्ची और यथार्थ कर्मातीत अवस्था वह है है जिसमें कि विकर्मों का बोझ बिल्कुल न हो। इसीलिए, जिस क्षण भी वह अवस्था प्राप्त होती है, उसी क्षण शरीर छूठ जाता है। इसका यह तात्पर्य भी नहीं है कि जो आत्मायें शरीर छोड़ती हैं, वे सब कर्मातीत अवस्था को प्राप्त करती हैं। मृत्यु तो कई कारणों से जीवात्मा प्राप्त करती है परन्तु सर्वश्रेष्ठ और अति दुर्लभ कारण है—'कर्मातीत अवस्था' जिस क्षण पिछले तथा वर्तमान जन्म के विकर्म भस्म होते हैं उसी क्षण यह शरीर छूट जाता है।

कर्मातीत अवस्था प्राप्त होने के बाद ही आत्मा मुक्तिधाम में जा सकती है। परन्तु मुक्तिधाम के द्वार अब तक नहीं खुले हैं। इसलिये ऐसी कर्मातीत आत्माओं को सूक्ष्म वतन में विश्राम करना पड़ता है। इस प्रकार, इस ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग के परिणाम की जाँच करने से ही पता लगता है कि जन्म-जन्मान्तर ईश्वरीय ज्ञान के बिना मनुष्यों के मत पर चलकर जो कुछ भी किया वह व्यर्थ तथा अल्पकाल की प्राप्ति के लिए ही था। इन कर्मातीत आत्माओं का फिर-से इस कल्प में इस स्थूल साकारी सृष्टि में जन्म नहीं होगा। वास्तव में इस प्रकार की मृत्यु को 'मृत्यु' भी कहना ठीक नहीं क्योंकि यह ऐसी मृत्यु है जिसके बाद फिर से जन्म नहीं। और, इसीलिए श्राध आदि या मृत्यु के पश्चात् क्रिया करने की भी दरकार नहीं रहती। सूक्ष्म वतन में भी अपने अन्तिम स्थूल शरीर के सदृश्य सूक्ष्म शरीर धारण करके कर्म-बन्धन से मुक्त आत्मा वहाँ रहती है।

इस ईश्वरीय ज्ञान को धारण तो कई लोग करते हैं परन्तु इससे पहिले कि सम्पूर्ण कर्मातीत तथा कर्म-बन्धन से मुक्त अवस्था प्राप्त हो, कई बार ऐसा होता है कि वृद्ध अवस्था या किसी रोग आदि के कारण किसी का शरीर छूट जाता है। तब दूसरे स्थूल शरीर में जन्म लेना पड़ता है, परन्तु शुरू में ऐसी ज्ञानवान आत्माएँ सूक्ष्म वतन में थोड़े

समय अर्थात तीन दिन से तेरह दिन तक रहती हैं। सूक्ष्म वतन के देवताओं के साथ रहकर बाद में वे फिर-से अपनी प्रारब्ध के अनुसार माता के गर्भ में प्रवेश करके देह धारण करती हैं।

'ज्ञान' का अर्थ ही है 'रोशनी' और इसीलिए ज्ञानवान आत्मायें अधिक निर्मोही होती हैं। ऐसी आत्मा के मित्र-सम्बन्धी उसमें तो आसक्ति रखते हैं परन्तु उस आत्मा की आसक्ति उनमें नहीं रहती। इसी कारण कभी उसके मित्र-सम्बन्धी उसकी आत्मा को मिलने के लिए किसी के तन में बुलाते भी हैं परन्तु वह आत्मा मिलने के लिए भी नहीं आती। अज्ञानी आत्मा जब मिलने के लिये आती है तो मोह के वश होकर आँखों से अश्रु बहाती है परन्तु ज्ञानी आत्मा शान्त और समाधान चित्त होकर अपनी एक-रस अवस्था में स्थित होकर अपना मिलने का पार्ट प्यार से बजाती है।

परन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि वह आत्मा सम्पूर्ण रीति से अर्थात १६ कलायें ज्ञान धारण न कर सकी हो। उसे इच्छा तो होती हो, परन्तु फिर भी वह अपनी कमी के कारण ज्ञान का सम्पूर्ण लाभ न उठा सकी हो। तब उस आत्मा के अन्दर पश्चाताप की भावना भी पैदा होती है। इसलिए, जब ऐसी आत्माएँ सबको मिलने के लिए आती हैं तब वह अपने साथियों आदि को अपना अनुभव सुनाते-सुनाते अवश्य ही यह कहती है कि परमात्मा के अवतरित होने तथा परिचय मिलने पर भी उसे सम्पूर्ण रूप से न समझने के कारण तथा ज्ञान को सम्पूर्ण रीति न धारण करने के कारण उसने अपने जीवन में बहुत कुछ खोया है। ऐसी आत्मा के मृत्यु के पश्चात का अनुभव सुनने से मन्द पुरुषार्थी को भी अपना पुरुषार्थ को तीव्र बनाने का बल मिलता है।

परमात्मा तो सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाला है। कई यह चाहते हैं कि हमें धर्मराजपुरी में सज़ायें न खानी पड़ें। जितनी भी सज़ा हो वह सब यहाँ ही भोगकर समाप्त करें। परन्तु पुरुषार्थ पूर्ण होने से पहले ही शरीर छूट जाने के कारण वह आत्मा अपना मनोरथ पूर्ण नहीं कर सकती। तो ऐसी मनोकामना पूर्ण करने के लिए शरीर छूटने से पहले अर्धचेत अवस्था में उस आत्मा को उसके अनेक पिछले जन्मों के विकर्मों का दण्ड देकर विकर्म के बन्धन से उसे मुक्त करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि मृत्यु से पहले जब बेहोशी की अवस्था होती है तो शरीर की स्थूल इन्द्रियों को देह-भान नहीं होता बल्कि आत्मा तो जागृत होती है और अपना हिसाब-किताब चुका रही होती है।

ऐसी ज्ञानी आत्मा शरीर छोड़ने के बाद अगला जन्म अच्छे परिवार में लेती है। परमात्मा के तो यह महावाक्य हैं कि अब तो मेरे साथ तुम्हारा सीधा ही सम्बन्ध होने के कारण तुम आत्माएँ जो भी कुछ करती हो उन सबका मैं तुम्हें सौगुणा फल देता हूँ। परमप्रिय सर्वशक्तिमान् परमात्मा के ये वचन व्यर्थ नहीं जाते। उस फलदाता परमात्मा के ये महावाक्य सचमुच १००% सत्य हैं—ऐसा ज्ञानी आत्माओं के अनुभव से पता लगता है।

३—जो आत्मायें अपने यौवन, बुद्धि, धनपदार्थ, विद्या आदि के नशे में चूर अपने जीवन में उन्मत्त, तमोप्रधान, भोगी जीवन रूपी कीचड़ में फंसी होती हैं और उन्हें उनके जीवन-काल में साधारण तन में आये हुए परमात्मा का परिचय दिया गया हो परन्तु फिर भी उन्होंने उस परिचय को ठुकराया हो तो शरीर छोड़ते समय उनकी क्या गति होती होगी, यह जानना भी आवश्यक है। इसी प्रकार शास्त्रों में असीम श्रद्धा रखने वाली, भक्ति-प्रधान जीवात्माएँ जिन्हें भी स्वयं परमात्मा द्वारा दिया हुआ ज्ञान उनके जीवन-काल में दिया गया हो और उन्होंने ऐसे ज्ञान के प्रति उदासीन वृत्ति, उपेक्षा नीति तथा अनजाने से अयोग्य निन्दा-युक्त ग्लानि वाले शब्द उच्चारण किए हों तो शरीर छोड़ने के बाद उनकी गति क्या होती होगी, यह भी जानना बहुत ही आवश्यक है।

इन दोनों प्रकार की आत्माएँ शरीर छोड़ने के बाद अपने पिछले जन्म को याद कर बहुत ही पश्चाताप करती हैं। ऐसे भोग-प्रधान व्यक्ति की आत्मा यह तो अवश्य ही मानती है कि उसने कुछ

भी नहीं पाया। मृत्यु के कारण यौवन का नशा टूट जाता है। बाकी धन वैभव तो जैसे महान् सम्राट सिकन्दर ने मरने के समय अपना खाली हाथ सब को दिखाया, इसी प्रकार वह भी कुछ काम का नहीं रहा। ऐसी आत्मा जब सूक्ष्म लोक में आती है तो उसकी अवस्था ऐसी होती है जैसे कि शराब पिये हुए किसी व्यक्ति का नशा उतरने पर उसकी अवस्था होती है।

वास्तव में ऐसी आत्मा सूक्ष्म लोक में जा नहीं सकती। सूक्ष्म लोक में अथवा सूक्ष्म देवताओं की पावन दुनिया में ऐसी आत्मा एक क्षण के लिए भी जा नहीं सकती। परन्तु ऐसे तमोप्रधान व्यक्ति के मित्र-सम्बन्धियों की उसके प्रति जो शुभकामना रहती है, उसी कारण जब उसके लिए भोग लगाया जाता है तो यह मनोकामना पूर्ण करने के लिए दयालु परमात्मा उस अज्ञानी एवं अशुद्ध आत्मा को बिल्कुल थोड़े समय के लिए वहाँ बुलाते हैं। उस समय दो-चार मिनट पूर्ण पश्चाताप की घड़ी होती है। आँखों से आँसुओं की धारा बहना शुरू हो जाती है। सिर उठाकर परमात्मा से दृष्टि लेने की भी हिम्मत उसमें नहीं रहती। इस सृष्टि में यदि कोई सबसे अधिक करुणा भरा दृश्य है तो वह उस समय का है जबकि सूक्ष्म लोक में सूक्ष्म ब्रह्मा के तन में विराजमान परमपिता परमात्मा के सामने खड़ा होकर वह लज्जित एवं दुःखी आत्मा कहती है कि—'हे परमात्मा! हे परमात्मा! मेरे जीवन-काल में मुझे अपना परिचय मिला, आपका संदेश भी मिला परन्तु हाय मेरी तकदीर! मैंने आपको पहचाना नहीं, मैंने शिशुपाल तथा कंस की तरह आपकी तथा आपके जो भी 'बच्चे' बने उन सब की ग्लानि की। जीवन में जो पाना था वह नहीं पाया और अब यहाँ पश्चाताप करना पड़ रहा है। धिक्कार है मुझ पर!' अपने पुराने देह के सम्बन्धियों के प्रति उसका यही सन्देश होता है कि—'धन्यवाद है आपको, आपकी शुभ कामना के कारण आज मेरे जैसे पापी अजामिल आत्मा को परमात्मा का दर्शन मिला। आपने तो मुझे यह ज्ञान-सन्देश दिया था परन्तु मैंने आपकी अवहेलना की। मैंने जीवन-भर में इतना करते भी कुछ नहीं पाया और आपने एक परमात्मा को पाकर सब कुछ पा लिया।'

भक्ति-प्रधान संस्कारों वाली आत्मा भी ऐसी गति को प्राप्त करती है। किये हुये अच्छे कर्मों के फलस्वरूप उनकी गति कुछ अच्छी होती है, इसलिये उनका पश्चात्ताप कुछ कम होता है। फिर भी जिस परमात्मा को अब तक सर्वव्यापी मान कर तथा देहधारी आत्मा को परमात्मा मानकर उसके लिये घर-बार का भी त्याग किया है, ऐसे संन्यासियों को गुरु बनाकर अपनी तन-मन-धन की सारी शक्ति उसमें लगाई और उससे जो कुछ भी अल्पकाल के लिये प्राप्ति हुई, वह तथा परमात्मा का सत्य स्वरूप समझ कर योगयुक्त तथा ज्ञान द्वारा अच्छे कर्मों के फल का महान् अन्तर उसके सामने आता है। उस व्यक्ति की अल्पज्ञात्मा सर्वज्ञ परमात्मा के सामने प्रत्यक्ष होती है। "भक्ति से सद्गति नहीं होती," ये त्रिकालदर्शी परमात्मा के महावाक्य हैं। मीरा, नरसी मेहता, एकनाथ आदि भक्तों के अनुभव ने जिस परमात्मा के साक्षात्कार की महिमा का वर्णन किया है, या गीता के अन्दर अर्जुन का अनुभव जो ११ वें अध्याय में है, इन सबसे भिन्न, अनोखा अपना स्वयं का अनुभव प्राप्त करके वह भक्तात्मा आश्चर्य को प्राप्त करती है और कहती है कि 'अरे, परमात्मा को तो हमने कैसा समझा तथा सुना था, परन्तु वह तोसचमुच कितना न्यारा और प्यारा है!'

भक्त की आत्मा हाथ जोड़कर प्रार्थना करती है कि 'क्षमा करो मेरी भूल, नाथ मैं हूँ चरणों की धूल' और इस प्रकार अपनी भूल परमात्मा के सामने रखती है। इस प्रकार मृत्यु के कारण उस बेचारे का भी कल्याण होता है। वरना तो वह कभी अज्ञान की नींद से उठता ही नहीं था। मृत्यु भी कल्याणकारी परमात्मा को पहचानने में भी सहायक बनती है।

४. **अज्ञानी आत्मा**—कई बार ऐसा होता है कि कई आत्माओं को अपने जीवन-काल में परमात्मा का यह सन्देश नहीं मिलता कि वह (परमात्मा) वृहद सृष्टि का स्वर्गिक वर्सा देने के लिये इस सृष्टि पर आ चुके हैं। परन्तु बाद में उनके मित्र सम्बन्धी आदि को यह सन्देश मिलता है तो उनकी उस

आत्मा के प्रति, जिसने कि शरीर छोड़ दिया है, यह शुभकामना रहती है कि जहाँ भी वह जाये, वहां उसको ज्ञान-सन्देश मिले। विधवा स्त्री अपने मृत्यु-पति या तो पति अपनी मृत्यु-प्राप्त पत्नि के लिए शुभ भावना रखते हैं। बच्चे भी यदि समझदार हों तो वो भी शुभ भावना अपने माता-पिता के लिए रखते हैं। तो क्या ऐसी आत्माएँ जिन्हें कभी भी अपने जीवन काल में परमात्मा का सत्य परिचय नहीं मिला था, बाद में यह परिचय अर्थात् ज्ञानरूपी रोशनी प्राप्त कर सकती है।

सामान्य रीति से यह कार्य मुश्किल लगता है। परन्तु सर्वशक्तिमान् परमात्मा के लिए कोई भी बात असम्भव नहीं है। सबकी शुभ आशा पूर्ण करने वाले सुखदाता परमात्मा ऐसी शुभ भावना अवश्य पूर्ण करते हैं। अनुभव ऐसा कहता है कि जब ऐसी आत्मा के प्रति भोग आदि रखे जाते हैं तब परमात्मा उनको सूक्ष्म वतन में बुलाते हैं। जब पहली-पहली बार ऐसी आत्मा वहाँ आती है तो अज्ञान होने के कारण सूक्ष्म वतन के देवताओं को नहीं पहचानती। फिर तो भोग के अनेक अवसरों पर वहाँ आने से परमात्मा से सन्मुख महावाक्य सुनकर उनको भी ज्ञान-धन की प्राप्ति होती है। ज्ञान के कारण वृत्ति तथा बाद में जीवन में परिवर्तन आता है। कल्याणकारी, बल-वर्धक परमात्मा की शुभ दृष्टि से उनका अज्ञान अन्धकार दूर होता है और जहाँ भी उस आत्मा ने जन्म लिया हो, वहाँ उसके मन में ज्ञान के प्रति बड़ा होने पर खिचाव होता है।

इस तरह ज्ञान-रोशनी को प्राप्त करके उस आत्मा में कितना अन्तर पड़ता है, वह समय समय पर उनके प्रति भोग लगा कर जाँच करने से पता लगता है। अनुभव ऐसा बताता है कि एक ऐसी आत्मा के प्रति जब भोग आदि लगाये जाते थे तो शुरू में तो विकारी आत्मा अज्ञान की तमोप्रधान राह को काट कर सूक्ष्म लोक में आती थी। तब जैसे कि सैन्टर पर कोई नया व्यक्ति आता है तो ऐसी ही चलन वह आत्मा भी चलती थी। बाद में ७-८ वर्ष तक इसी तरह भोग के समय सूक्ष्म वतन में आने के कारण परमात्मा को अच्छी तरह पहचानती है तथा हरेक प्रकार की इच्छा पूर्ण करने वाले परमात्मा के पास अपनी इच्छा भी रखकर पूर्ण कराती है।

इस प्रकार, मृत्यु अज्ञानी को ज्ञानी, भक्त को भी ज्ञानी बनाने में सहायता दे सकती है।

साधारणतः यह कहा जा सकता है कि मृत्यु को जितना भयदायक समझा जाता है, उतनी है नहीं। ऐसी ज्ञान-प्रचारक, शक्ति-वर्धक तथा कई बार जीवन में वास्तविक दृष्टिकोण देने वाली सुखदायी मृत्यु को अब पहचानना अति आवश्यक है क्योंकि हम काल को भी जानकर सत्युगी देवता बनने का पुरुषार्थ करने वाले हैं। निर्भयता रूपी दैवी गुण धारण करने में अर्थात् भयरूप अवगुण को निकालने में मृत्यु की सच्ची पहचान बहुत जरूरी है। मृत्यु को इस प्रकार यथार्थ समझ कर हम जीवन की वास्तविकता को जान सकेंगे।

गज़ल

□ब्र.कु. राजकुमारी, देहली

आखिरी वक्त है, सांस है आखिरी,
कल्प की नुमां शाम आखिरी।
भटके इन्सान बदल नयी सुबह के लिए,
ज़िन्दगी की ये शाम आखिरी।
आखिरी वक्त है.....।
तोबा कर ले... हां तोबा कर ले विकारों में गिरना नहीं।
ज़हर अब और तूने ये पीना नहीं,
तोबा करने से पहले इन्सान सोच ले।
ये पीना पिलाना है मरण आखिरी,
आखिरी वक्त है.....।
रूहानियत इबतदा (१), रूहानियत इन्तहा (२),
शिव बाबा के रूह रिहाण में मैं तो खो गया।
फ़रिश्ता बनना मेरा आखिरी फैसला (२),
पवित्रता मेरा इमां आखिरी,
आखिरी वक्त है.....।
सुख में तूने...हां सुख में तूने कदर जान की न की,
ज़िन्दगी तेरी जब गमों में खो गई।
आखिर सबसे धोखा मिला जब तुझे,
पकड़ा शिव बाबा ने तेरा हाथ आखिरी।
आखिरी वक्त है.....।□

माऊंट आबू : 'सम्पूर्ण स्वास्थ्य सम्मेलन' के समापित सत्र में अपने विचार प्रकट करते हुए भ्राता ब्र० कु० बनारसीलाल जी।

पटना—ब्र.कु. निर्मलमणि बिहार विधान सभा के अध्यक्ष प्रो. शिवचंद्र झा को ल.ना. का चित्र सौगात में दे रही हैं।

भुवनेश्वर : उड़ीसा की हरिजन तथा जनजाति कल्याण मन्त्री बहन परमा पुजारी सात दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन करती हुई।

अमृतसर में शिवरात्री के उपलक्ष्य में झांकी का उद्घाटन करने के बाद दादी चन्द्रमणि जी, भ्राता नरेन्द्र सिंह जी तथा अन्य दिखाई दे रहे हैं।

बेलगाम कर्नाटक सरकार के शांति सप्ताह महोत्सव के शुभ अवसर पर ब्रह्माकुमारी भाई-बहनों का एक विशाल समूह शांति का संदेश देते हुए।

नवसारी (गुजरात) में सर्वधर्म सम्मेलन आयोजित किया गया था। मंच पर बी.के. गीता, भ्राता जयन्ती डी. काजी, फादर ज्योत वोलेस, स्वामी सुरेन्द्र आनन्द, डोसा भाई एच. देसाई पारसी अंजमन दिखाई दे रहे है।

ब्रह्मपुर (गांधी नगर) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित विशाल शांति यात्रा का शुभारम्भ भ्राता डी.पी.एस. चौहान जी ने किया।

उदयगीर—अहमदपुर उपसेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्री महापर्व पर ब्र.कु. महानन्दा सर्विस रिपोर्ट सुना रही है। मंच पर अतिथिगण बैठे है।

रांची सेवा केन्द्र पर ध्वजारोहण के पश्चात खड़े है रांची विश्वविद्यालय के इतिहास विभागाध्यक्ष भ्राता डॉ. सुशील माधव पाठक तथा रांची केन्द्रीय कारागार के अधीक्षक भ्राता श्री दशरथ प्रसाद सिंह जी।

दिल्ली (लारेन्स रोड) सेवा केन्द्र की ओर से होली के पावन पर्व पर एक आध्यात्मिक समारोह में ब्र.कु. बहनें तथा भाई दिखाई दे रहे है।

बेरिन में महिलाओं के संगठन में बाबा का सन्देश देती हुई बी.के. ज्योति बहन।

बेहरामपुर (मंजानगर) के.एस.यू.बी. कॉलेज आध्यात्मिक विज्ञान प्रदर्शनी को भ्राता बी.के. अरुप जी विधान सभा के सदस्य भ्राता उमाकान्त मिश्रा जी को समझा रहे है।

गाजियाबाद (लोहिया नगर) : सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ती के अवसर पर ब्र.कु. कमलेश जी ध्वजारोहण कर रही हैं। गणमान्य व्यक्तियों ने भी भाग लिया।

निजामाबाद गीता पाठशाला में ब्र.कु. लीला बहन भ्राता सदानन्द जी को शिव बाबा का चित्र भेंट कर रही है।

जालना महा शिवरात्री के अवसर पर चैतन्य झांकी "सबका और सच्चा मालिक कौन"

भावनगर —ज़िला टेकनीकल कर्मचारी यूनियन की वार्षिक मीटिंग में ब्र.कु. विष्णु भाई विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए।

अफजलपुर : शिवरात्री के महापर्व पर पधारे हुए अतिथिगण विश्व शांति महा सम्मेलन माऊंट आबू का अनुभव सुना रहे है।

लखनऊ (खुर्शीदबाग) : आध्यात्मिक सम्मेलन में भूतनाथ जी महाराज एवं स्वामी प्रज्ञानन्द जी, ब्र.कु. भगवती व ब्र.कु. सती जी बैठी है।

फिलौर : शिव जयन्ती के कार्यक्रम में ब्र.कु. राजकुमारी, विजय, भ्राता यशपाल जी व दादी चन्द्रमणि जी विराजमान है।

कलकत्ता नये आश्रम बज-बज पर ब्र.कु. बहनें शिव ध्वजारोहण करते हुए।

दिल्ली (हरीनगर) राजयोग केन्द्र के वार्षिक उत्सव के अवसर पर भ्राता एन.आर. चन्दन जी, भ्राता गणेश दास जी (कौंसिलर) बी.के. बृज मोहन जी, बी.के. आशा जी। बी.के. सुमन जी मंच पर दिखाई दे रहे

दिल्ली (ज्ञानपुर) ज्ञान शिव शक्ति मन्दिर में शिव ध्वजारोहण करते हुए उस क्षेत्र के पार्षद जी।

बड़ौदा में प्रदर्शनी में मेयर भ्राता नलिन भाई भट्ट को शिव बाबा का परिचय देती हुई ब्र.कु. रेखा।

मोगा के एस.डी.एम. भ्राता अमरजीत सिंह जी ने शिव ध्वजारोहण किया। यह चित्र उसी अवसर का है।

दिल्ली (मालवीय नगर) सेवा केन्द्र पर शिव ध्वजारोहण करती हुई ब्र.कु. सुन्दरी जी तथा कौंसिलर देवेन्द्र मूद जी।

गोंदिया की ओर से तमसर में पत्रकार वार्तालाप चला। पत्रकारों के साथ बी.के. वल्लभ भाई, बी.के. वसन्त भाई बैठे हैं।

बोकारो : शिव ध्वजारोहण के पश्चात आर.सी. चर्च के फादर के साथ ब्र.कु. बहन-भाई दिखाई दे रहे हैं।

शिमला सेवा केन्द्र पर जिलाधीश भ्राता जय प्रकाश नेगी व बी.के. अरुणा बहन शिव बाबा की स्मृति में बैठे हैं।

आदिपुर (कच्छ)—सिंधी समाज के अग्रणी कार्यकर्ता भ्राता आसनानी जी शिव-ध्वज लहराते हुए।

हिसार : हरियाना कृषि विश्वविद्यालय के किसान मेले में लगाई गई प्रदर्शनी का अवलोकन करने वाइसचान्सलर कटारिया जी पधारे थे। उन्हें ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. रमेश, सावित्री।

कहानी

"गरीबी का कारण तथा निवारण"

ब्र.कु. बिंदू, अमरावती, महाराष्ट्र

उदयगिरि के राजा उदयसेन बड़े धर्मात्मा पुरुष थे। उन्होंने अपने राज्य में किसी भी व्यवसाय अथवा धंधे में लगे हुये लोगों के सुख एवं आराम के लिए समुचित व्यवस्था की थी। जिनके पास कोई काम नहीं था, उनके लिए उन्होंने काम का प्रबंध किया, ताकि कोई दारिद्रय का शिकार न हो। आत्म-निर्भरता का भाव विकसित होने के कारण सारे देश में याचक वृत्ति का अभाव हो गया। केवल वे ही लोग भीख मांगकर गुज़ारा करते थे, जो काम करने की स्थिति में न थे, या बूढ़े और विकलांग थे।

उदयगिरि के भिखारियों में एक शीतल नाम का युवक भी था। जब से उसने होश सम्भाला, भीख को ही अपना धंधा समझा। क्योंकि उदयगिरि में भिखारियों को अधिक प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था, इसलिए इस पेशे की स्थिति बदतर होती जा रही थी। शीतल को विशेष रूप से यह स्थिति अखरने लगी थी।

एक दिन ऐसा आया कि शीतल को दोपहर तक एक अन्न का दाना नहीं मिला। जब भूख बहुत अधिक सताने लगी तो वह एक पेड़ की छाया में बैठकर रास्ता चलने वालों से भीख मांगने लगा। पर किसी ने उसकी तरफ देखा तक नहीं। उसने सोचा कि शायद भगवान का ध्यान करने से उस पर किसी को दया आ जाए। इसलिए वह ज़ोर-ज़ोर-से चिल्लाने लगा, "हे परमात्मा, इस गरीब को थोड़ी भीख दे! हे दीनदयाल! भूख से पीड़ित व्यक्ति को रोटी का एक टुकड़ा दे। हे दयामय, इस दीन को थोड़ा दान दे!"

पर किसी ने भी उसकी पुकार नहीं सुनी। भूखा तो वह पहले ही था, चीखने-चिल्लाने से उसका होश जाता रहा। वह भगवान पर क्रोधित होकर गलियां देने लगा, "अरे भगवान, तू कहां मर गया? कहते हैं जो जन्म देता है वह भोजन भी देता है।" तूने मुझे जन्म दिया, फिर खाना क्यों नहीं देता?

उस समय राजा उदयसेन घोड़े पर सवार गुज़र रहे थे। उन्होंने भिखारी की बातें सुनीं तो घोड़ा रोक दिया और उतरकर भिखारी के पास जाकर पूछा, "अरे तू किसको गालियां दे रहा है?"

और किसे? "उस पापी भगवान को!" शीतल ने जवाब दिया।

"भगवान की पूजा की जाती है, निंदा नहीं। बता, भगवान ने तेरे साथ क्या अन्याय किया है?" राजा उदयसेन ने पूछा।

"और करने को क्या रह गया है? सुबह से भूखा हूं। कोई भीख तक नहीं देता।" भिखारी शीतल ने जवाब दिया।

"अगर खाना चाहता है तो मैं दे दूंगा। मैं इस देश का राजा हूं। पर अगर तू मुझे अपना एक हाथ काटकर दे दे तो, मैं तुझे एक हज़ार रुपया दूंगा। अगर एक पैर दे दे तो दो हजार रुपया दूंगा। अगर तू अपनी आंखें दे दे तो मैं तुझे अपना आधा राज्य दे दूंगा।" राजा उदयसेन ने कहा।

"तुम्हारा धन मुझे नहीं चाहिए। मैं तुम्हें कुछ भी नहीं दूंगा। भिखारी शीतल ने जवाब दिया।"

"इसका अर्थ है कि तुम बड़े ही भाग्यवान हो। तुम्हारे पास एक हज़ार रुपये से अधिक मूल्यवान हाथ, दो हज़ार से बढ़कर पैर तथा आधे राज्य से अधिक मूल्य की आंखें हैं।"

भगवान ने तुम्हें इतनी कीमती चीज़ें दी और तुम उनकी पूजा तो क्या उल्टे निंदा करते हो? मूर्ख जा, भगवान से प्राप्त मूल्यवान हाथ-पैरों का उपयोग करके अपना पेट भर। आगे कभी भीख मत मांगना। इस प्रकार राजा उदयसेन ने शीतल को उनके कर्तव्य के प्रति सचेत किया और वहां से चले गये।

उसी क्षण से शीतल ने भीख मांगना छोड़ दिया और शारीरिक श्रम करके अपनी आजीविका कमाने लगा।

इसी प्रकार पिता परमात्मा भी कहते कि बच्चे इस शरीर के मूल्य के साथ-साथ आत्मा के मूल्य को भी जानना अति आवश्यक है। जिससे गरीबी का निवारण सदा के लिए सहज ही हो सकता है। मानव में आत्मविश्वास और सच्चरित्र है तो कोई भी मौलिक व आर्थिक का अभाव उस गरीबी की महसूसता नहीं करा सकता। ऐसा व्यक्ति स्वयं के श्रम से श्रेष्ठ भाग्य का निर्माण कर लेता है। ईश्वर ने मनुष्य के विचार या कर्तव्य ही उसे गरीब या अमीर बनाते हैं। गरीबी एक मनोबल हीनता है, आत्म-दुर्बलता है। वास्तव में शरीर के मूल्य के साथ-साथ आत्मा के अविनाशी खज़ानों में पवित्रता, सुख, शांति है। जिसकी कीमत असीम है। शब्दों से, पैसों से भी नहीं की जाती। इसके मूल स्रोत हम सभी आत्माओं के निराकार परमपिता परमात्मा शिव ही हैं। उसको जानकर उनके साथ आत्मा के सर्व संबंध हों तो गरीबी का कारण तथा निवारण स्वत: ही हो जायेगा। □

चिड़ियां चुग गई खेत, अब पछताये क्या होत !

ब्र.कु. एम.एल., कोटा

कारवां बढ़ता जा रहा था अपनी मंज़िल की ओर। टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता, रतीले टीले, बालू भरा मार्ग । फिर भी वे बढ़ रहे थे नदी के प्रवाह की तरह । लक्ष्य प्राप्ति की लगन मार्ग के विघ्नों को खत्म करके उन्हें मंज़िल की ओर खींच रही थी ।

रात्रि का अंतिम पहर, अमावस्या की रात, नीले आसमां में चमकते सितारे ऐसे लग रहे थे मानो प्रकृति की नीली ओढ़नी पर सफेद फूल हों । चारों ओर निशब्दता, शांत वातावरण। शांति का साम्राज्य चारों ओर फैला हुआ था ।

यह एक रेगिस्तानी इलाका था । यहां दिन में सूर्य अग्नि बरसाता, जिससे बालू भी अग्नि समान गर्म हो जाती । ऊपर अग्नि, नीचे अग्नि । धूलभरी आंधियां मार्ग अवरुद्ध कर देती है। अत: रेगिस्तान में लोग रात्रि में यात्रा करते हैं ।

हां, तो वे कदम-२ बढ़ाते हुये रास्ता तय कर रहे थे । चलते हुये वे एक सुंदर रमणीक स्थान पर पहुंचे । यहां एक कल-२ करती नदी बह रही थी । किनारों पर खजूर के वृक्ष खड़े थे । नमी के कारण चारों ओर आसपास की घास भी हरी हो रही थी । नदी किनारों की ओर से सूखी थी । धारा बीच में केवल चार-पांच मीटर की चौड़ाई में बह रही थी । सूखी जगह में कंकड़-पत्थर पड़े थे । यहां आकर सबको अति शीतलता का अनुभव हुआ । यह रमणीक स्थान सभी को बहुत पसंद आया ।

रास्ता नदी के आरपार था अत: सभी नदी को पार करने लगे । अभी वे आधी नदी भी पार नहीं कर पाये थे कि एक मधुर ध्वनि सबके कानों में जा टकराई । ''ठहरो।'' सब हैरत में पड़ गए । यह आवाज़ कहां से आई ! सबके मन में यही प्रश्न अंकित हो गया । सब चारों ओर देखने लगे पर आगे-पीछे कोई नहीं था । कुछेक क्षण बाद फिर आवाज़ आई ''जो मैं कहता हूं उसे ध्यान से सुनो । इस नदी में जो कंकड़-पत्थर दिखायी पड़ रहे हैं इन्हें भरकर अपने साथ ले जावो । चाहो जितना भर लो।''

सभी के अलग-२ विचार थे । किसी ने सोचा 'हो न हो यह एक अलौकिक शक्ति है । अत: अगर आज्ञा न मानेंगे तो अकल्याण हो जायेगा।' यह सोचकर उसनें मुट्ठी-दो-मुट्ठी कंकड़ उठाये । जेब में डाल लिए । कुछ लोगों ने सोचा, 'अरे ये तो इस नदी के कंकड़ों को साफ करना चाहते हैं। कौन इन पत्थरों का बोझ ढोयेगा, अत: हम तो नहीं उठायेंगे ।' यह सोचकर उन्होंने तो हाथ भी नहीं लगाया । कुछ लोग समझदार भी थे । उन्होंने अपने विवेक से काम लिया, आगे-पीछे अच्छी तरह से सोचा । उन्होंने उस आवाज़ को गौर से सुना था । उस आवाज़ में मिठास थी, अपनापन था । कल्याणकारी थी वह आवाज़ । 'ज़रूर यह कोई देवआत्मा है और इनकी आज्ञा से हमारा कल्याण निश्चित है । उन्होंने विश्वास किया उस आवाज़ पर । अत: उन्होंने अपने ऊंट लाद लिये । क्योंकि ऊंट तो उनके पास थे ही मेहनत केवल भरने की थी । अर्थात् किसी ने मुट्ठी, तो किसी ने थैला भरा, किसी ने गठरी, तो किसी ने ऊंट भर लिए उन पत्थरों से।

फिर आवाज़ आई ''जब आप दूर बहुत दूर निकल जावोगे । जब सूरज उदय होगा तो आप हंसोगे भी खूब, तो रोओगे भी खूब।'' समझने वाले समझ गए । समझदार को इशारा काफी ।

यह काफिला नदी को पार करके आगे चल दिया । अब तो अंधियारा घटने लगा । पूर्व दिशा लाल होने लगी थी । सभी पक्षी जगकर नवप्रभात के गीत गाने लगे थे । रवि देव चुपके-२ रेतीले टीलों के बीच झांकने लगा था । अपनी सुनहरी गोल्डन रश्मियां चारों ओर बिखेरकर नव दिन के आगमन की सूचना दे रहा था ।

इस समय भोर होने तक काफिला काफी आगे निकल आया था । सहसा एक यात्री को ठोकर लगी । जिससे व गिर पड़ा और उसकी जेब से रात के पत्थर बिखर गये । आश्चर्य ! यह कैसे पत्थर ? ये तो सूर्य सदृश्य चमक रहे थे । यह पत्थर नहीं हीरे, रत्न अमूल्य मोती हैं । एक-२ करोड़ों का है । वह व्यक्ति नाचने लगा । खुशी में और सभी वहां इकट्ठे हो गये । सभी को बात समझते देर न लगी । सभी ने अपनी गठरी, थैले, ऊंट सम्भाले, परंतु यह क्या ? ये सब पत्थर नहीं, अमूल्य रत्न थे । सब खुशी-से हंसने लगे, नाचने लगे क्योंकि वे एक रात में मालामाल हो गये खुशी क्यों न हो ?

एकाएक कुछ रोने पश्चाताप करने लगे, ''हाय ! हाय ! हमने ज्यादा क्यों नहीं लिया ? वहां तो पूरी नदी भरी पड़ी थी । हमने तो एक-दो मुट्ठी भरी । कोई माथा पीट रहा था।'' मेरा भाग्य फूटा था उस कल्याणकारी की बात न मानी । मैंने तो एक

(शेष पृष्ठ २८ पर)

एकता और अनेकता का चक्र

व्ही. जे. वराडपांडे, न्यायाधीश, दमोह

गीता में भगवान कहते हैं ''सर्वधर्मानि परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।'' जब अनेकता की पराकाष्ठा हो जाती है तभी एकता की स्थापना करने अनेकता का विनाश करने के लिए भगवान आते हैं । भगवान का यह अवतरण सिद्ध करता है कि एकता की स्थापना मनुष्य के बस का काम नहीं है, बल्कि भगवान का ही काम है क्योंकि वही इस कर्तव्य के लिए सक्षम है । गीता के उपरोक्त महावाक्य में यह सत्य छिपा हुआ है कि दुनिया में जो अनेक धर्म प्रचलित हैं वे सब देह के धर्म हैं । अर्थात् अपने को देह समझने के कारण ही इन धर्मों को जन्म मिला है । चूंकि देह के धर्म दुख और अशांति का कारण हैं इसलिए सुख और शांति प्राप्त करने के लिए भगवान यही उपदेश देते हैं कि देह के अनेक धर्म छोड़ आत्मा के धर्म में स्थित होओ । अत: भगवान की इस श्रीमत् के मुताबिक प्रत्येक मनुष्य को यह जानना आवश्यक है कि मैं एक आत्मा हूं और मेरा धर्म पवित्रता और शांति है । मूल रूप में आत्मा है ही पवित्र स्वरूप और शांति स्वरूप । इसी पवित्रता और शांति को धारण करने का निर्देश परमात्मा देते हैं । मनुष्य का वास्तविक स्वरूप ज्योतिर्बिंदु हैं न कि स्थूल देह । अत: इस नाते सभी का एक स्वरूप होने के कारण सब आत्माओं का धर्म भी एक है । और सबका पिता एक परमात्मा है । तथा सबका मूल घर भी एक है जो सूर्य-चांद और सितारों से भी पार परमधाम अर्थात् आत्माओं की दुनिया है । इस प्रकार के विचार यदि सभी मनुष्यों के हो जायें तो उनके आचरण-विचरण में, आहार-व्यवहार में, रीति-रिवाजों में और मत-मान्यताओं में समानता अथवा एकता आजायेगी। यदि विचारों में एकता आजावे तो अन्य बातों में एकता आना मुश्किल नहीं है ।

आज कई लोग यह कहते सुनाई पड़ते हैं कि भारत में अनेकता के होते हुये भी एकता है । किंतु कटु सत्य यह है कि केवल अनेकता है एकता नहीं है । हम पूछते हैं एकता है किस बात में ? यदि एकता होती तो फिर अनेकता क्यों, जहां एकता है वहां अनेकता नहीं, जहां अनेकता है वहां एकता नहीं । केवल एक देश में रहना यह तो कोई एकता नहीं हुई । एक घर में परिवार के अनेक सदस्य भिन्न-भिन्न स्वभाव और संस्कार वाले होते हैं तो स्वभाव और संस्कारों के टकराव के कारण परिवार में अशांति व्याप्त हो जाती है । तो ऐसा रहना क्या काम का, कभी-कभी तो परिवार के अनेक सदस्य बटकर अलग हो जाते हैं । अत: एक घर में या एक देश में रहने का कोई महत्व नहीं है बल्कि महत्व इस बात का है कि एक देश में या विश्व में रहकर क्या मनुष्य सुख और शांति से रहते हैं । बिना लड़ाई-झगड़ा किये रह सकते हैं ? तो कारण यही है कि वैचारिक एकता नहीं । वैचारिक एकता ही विश्व एकता की पहली सीढ़ी है । भगवान एक है इस मान्यतां को यदि व्यवहारिकता में लावें और एक धर्म, एक ईश्वर में सभी अपना विश्वास व्यक्त करें तो यही एक धर्म और एक विश्वास कौमी एकता अथवा विश्व एकता का सशक्त आधार बन सकता है । परंतु विडम्बना यह है कि हर सम्प्रदाय के अपने-अपने विश्वास, अपनी-अपनी मान्यतायें, अपने-अपने मत हैं । सभी का अपना-अपना आलाप और सभी की अपनी-अपनी ढपली है । इस कारण आपस में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है । हिंदू मूर्ति पूजक हैं, किंतु मुसलमान मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं करते । मुसलमान कहता है कि खुदा सातवें आसमान में है किंतु हिंदू कहता है कि सर्वव्यापी है। ऐसी ही बातें लेकर वे एक-दूसरे से टकराते हैं और खून खराबा करते हैं ।

यदि विश्व के सारे मनुष्य इस बात को बुद्धि में धारण कर लें कि हम सब आत्माएं हैं, हम सबका पिता परमात्मा है और हम सब आत्मायें परमधाम की रहने वाली हैं, हम सबका धर्म पवित्रता और शांति है तो निश्चित रूप से इस वैचारिक एकता के कारण लड़ाई-झगड़ा, टकराव, मनमुटाव, पथराव, घिराव आदि सब समाप्त हो जायेंगे ।

आज एकता का यथार्थ स्वरूप देखने में नहीं आता है । कभी-कभी समय या परिस्थिति अनुसार मनुष्य एक हो जाते हैं । किसी सामान्य उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपना संगठन बना लेते हैं किंतु वह तभी तक जब तक उनका स्वार्थ सिद्ध नहीं हो जाता । स्वार्थ सिद्धि के बाद फिर वही आपसी फूट और लड़ाई-झगड़े । ऐसे संगठनों का विघटन होने में देर नहीं लगती । क्योंकि वह संगठन स्वार्थ पर आधारित होता है । आज एक समस्या को लेकर कुछ लोग एक हो जाते हैं लेकिन समस्यायें तो अनेक हैं । एक समस्या को सुलझाने जाते हैं तो

दूसरी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इन सब उलझनों का कारण वैचारिक अनेकता है । इतिहास इस बात का साक्षी है कि वैचारिक अनेकता ने किस प्रकार अनेक सम्प्रदायों और राजनैतिक गुटों को जन्म दिया है । भारत की स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए हिंसा का मार्ग अपनाया जावे अथवा अहिंसा का इस प्रश्न को लेकर दो मत हुए थे जिसने नरम दल और गरम दल को जन्म दिया था । भारत के टुकड़े होने का कारण ही वैचारिक अनेकता ही है । दुनिया में आज जो दो शक्ति-गुट बने हैं उसके पीछे भी वैचारिक विभिन्नता है। जिसने विश्व को विनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है।

शाश्वत सत्य यही है कि दुनिया का इतिहास पुनरावृत्त होता है । अर्थात् सृष्टि का एक चक्र है जो पुनरावृत्त होता है । सृष्टि का एक निश्चित घटनाक्रम है उस क्रमानुसार ही सृष्टि का चक्र घूमता रहता है । सुख के बाद दुख, रात के बाद दिन, वैसे ही एकता के बाद अनेकता और अनेकता के बाद फिर एकता यह सृष्टि का नियम है। और इस नियम के मुताबिक अनेकता के बाद एकता स्थापित होनी ही है। सृष्टि का प्रारम्भ एकता से शुरू होता है और उसका अंत अनेकता में होता है । सृष्टि के प्रारम्भ में एक भाषा, एक राज्य, एक मत, एक कुल होता है और कालांतर में इन सब बातों में अनेकता होने लग जाती है। और कलियुग के अंत तक अनेकता की पराकाष्ठा हो जाती है । एकता का युग सतोप्रधान युग अर्थात् सतयुग कहलाता है। और तमोप्रधानता का युग कलियुग कहलाता है जिस समय अनेकता और अधर्म अपनी चरमसीमा पर होते हैं । यही वह समय होता है जब सृष्टि चक्र के अनुसार पुनः भगवान अनेकता और अधर्म का विनाश कर एकता, एक धर्म, और एक राज्य की पुनर्स्थापना का दिव्य कर्तव्य करने के लिए अवतरित होते हैं । अतः मनुष्यों द्वारा अपने मतानुसार इस कार्य में माथा मारना क्या निष्फल प्रयास नहीं है ? यदि एकता और एक धर्म की स्थापना करना है तो उस परमात्मा की श्रीमतानुसार उसके दिव्य कार्य में हाथ बटाना हम सबका परम कर्तव्य है । ताकि एकता की सृष्टि स्थापित हो जावे। □□□

(पृष्ठ २६ का शेष)

रत्न भी नहीं उठाया । पर वे खुश थे जो ऊंट भरकर लाये थे । मन-ही-मन उस महान आत्मा को थैंकस (Thanks) दे रहे थे । सब भागकर पुनः उस नदी पर पहुंचे । परंतु अब न वहां हीरे थे और न वहां वह गुप्त आवाज़ । सभी रोने-चिल्लाने लगे, परंतु अब क्या हो सकता था ? ''चिड़ियां चुग गई खेत, अब पछताये क्या होत !'' अब तो हाथ से समय निकल गया था ।

आज जब हम कलियुगी मार्ग मरूभूमि से गुज़रकर संगम रूपी नदी को पार करते तो यह हमें हमारे मात-पिता परमपिता शिव बाबा इस संगमयुग में हम बच्चों के सामने ज्ञान, गुण व शक्तियों के खज़ाने खोल देते हैं, ''कहते—चाहो जितना ले लो।'' अगर अभी नहीं लोगे तो भविष्य में बहुत पश्चाताप करोगे । बाबा कहते ज्ञान का एक रत्न अमूल्य है । देने वाला एक, वर्सा समान परंतु पुरुषार्थ बराबर न होने से पद में भी सब नम्बरवार हो जायेंगे।

एक दिन वह आयेगा जब कोई तो पुरुषार्थ करके गुणों का स्टॉक जमाकर लेंगे, तो कोई ज्ञान का स्टॉक जमाकर ज्ञान-स्वरूप बन जायेंगे। कोई गुणों को धारण करके सर्वगुण सम्पन्न बन जायेंगे और कोई... हाथ मलते ही रह जायेंगे।

वर्तमान के पुरुषार्थ के आधार पर ही तो कोई राजा, कोई प्रजा तो कोई साहूकार तो कोई दास-दासियां जाकर बनेंगे ।

अतः बाबा की कल्याणकारी मत पर चल अपने समस्त खज़ानों को भर लेना है । विनाश से पहले ताकि हमें अंत समय पश्चाताप के आंसू बहाने न पड़ें और सतयुग में भी हमें ऊंच पद मिले । बाबा कहते—बच्चे सागर के केंठे पर आकर केवल एक बूंद से संतुष्ट नहीं होना । सागर बाप को हप करना है अर्थात् वर्सा पूरा-२ लेना है। □

गीत

ले. ब्र.कु. मोहन भाई, अमृतसर

ज्ञान अमृत पिलाता चल
रूहों की प्यास बुझाता चल
लेकर योग मशाल हाथ में
सबको राह दिखाता चल

शिव ने जो पावन ज्ञान बरसाये
जन-जन को संदेश सुनाये
मानव जागे जग को जगाये
सबकी आत्म ज्योति जगाये
दे आत्मा की तू पहचान
दुखी को सुखी बनाता चल

कर प्रतिज्ञा आज स्वयं तू
नव संसार रचायेंगे
तन-मन की आहुति देकर
स्वर्णिम भारत लायेंगे
भर-भर कर गुणों से झोली
हर गुण तू लुटाता चल। □

आध्यात्मिक सेवा समाचार

इंदौर: प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती वर्ष के समापन के उपलक्ष्य में न्यू पलासिया स्थित ओमशांति भवन में 'मानव विकास आध्यात्मिक सम्मेलन' का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन का उद्घाटन इंदौर उज्जैन रेंज के पुलिस महानिरीक्षक माननीय बी.आर. लूथरा जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । सम्मेलन के मुख्य अतिथि इंदौर नगरनिगम के महापौर माननीय श्री बल्लभ शर्मा जी थे । इस सम्मेलन में ब्रिटेन के राजयोग केंद्रों की निर्देशिका ब्रह्माकुमारी सुदेश जी, आयरलैंड स्थित डबलिन के पैट्रोलियम इंजीनियर भ्राता निकोलस ने अपने-अपने विचार सुनाए । क्षेत्रीय निर्देशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने आध्यात्मिक विकास पर ज़ोर दिया । कार्यक्रम का संचालन ब्र.कु. हेमलता जी ने सम्मेलन का प्रारम्भ दिव्यगति द्वारा तथा अंत दिव्य जीवन कन्या छात्रावास की कन्याओं के नृत्य द्वारा सम्पन्न हुआ । □

पुरी: माउंट आबू में समर्पण होने वाली कन्याओं की सम्बर्धना उत्सव मनाया गया । बहनों के सभी लौकिक सम्बंधियों तथा कई प्रमुख व्यक्तियों को निमंत्रण दिया गया । इस उत्सव में केंद्रीय राज्यमंत्री श्री चिंतामणी पाणीग्राही भी पधारे थे । सभी को ईश्वरीय साहित्य, सौगात, प्रसाद दिया गया । इस कार्यक्रम द्वारा अनेक आत्माओं की सेवा हुई । शिवरात्रि के अवसर पर भी प्रदर्शनी द्वारा अच्छी सेवा हुई। □

अहमदाबाद (मणिनगर): महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शहर के एच.के. हॉल में ''मानव एकता सम्मेलन'' का सुंदर आयोजन किया गया । सम्मेलन का उद्घाटन गुजरात यूनिवर्सिटी के वाइस चान्सलर भ्राता के.एस. शास्त्री जी ने किया । इस सम्मेलन में विभिन्न वर्ग व व्यवसाय के लोग पधारे थे । जैसे गुजरात हाईकोर्ट के न्यायाधीश एस. कुरैशी जी, वैज्ञानिक मैनेजिंग डॉयरेक्टर रमण भाई पटेल, डॉ. के.के. शाह, प्रोफेसर डॉ. एम. पेटसन जी तथा कथ्थक नृत्यांगना कुमुदिनी बहन आदि ने मानव एकता पर अपने विचार प्रगट किये । सम्मेलन के साथ-साथ सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी रखा गया । □

कलकत्ता: समाचार मिला है कि शिवरात्रि के पावन पर्व पर शिवरात्रि महोत्सव पर पंचतला शिव मंदिर में शिव भक्तों को संदेश दिया गया । मुख्य अतिथि गीता प्रचार मंडली के अध्यक्ष स्वामी देवानंद सरस्वती ने भी अपने विचार प्रगट किये। डॉ. जी. के. सराफ ने भी अपने सुंदर विचार सुनाए।

इसके अलावा कलकत्ता के बिशप कॉलेज में हुए सर्वधर्म सम्मेलन में ब्र.कु. बहनों को निमंत्रण मिला । मैक्सिको की ग्लोरिया बहन ने भी इस कार्यक्रम में अपने राजयोगी जीवन का बहुत अच्छा अनुभव सुनाया । गांवों की भी अच्छी सेवा हुई । होली महोत्सव पर प्रदर्शनी द्वारा ज्ञान योग का जन-जन को रंग लगाया गया। □

पटना: सेवाकेंद्र की ओर से महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर उद्योगपतियों के क्षेत्र में त्रिमूर्ति शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन बिहार विधानसभा के अध्यक्ष प्रोफेसर शिवचंद्र झा ने दीप जलाकर किया । आप प्रदर्शनी से बहुत प्रभावित हुए और कहा आधुनिक युग के लिए यह प्रदर्शनी तथा यहां की शिक्षाएं अति आवश्यक हैं। □

बिलासपुर (म.प्र.): प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयंती के समापन समारोह में विशिष्ट अतिथि भ्राता शरदचंद्र वोहरा ने कहा कि शांति सम्मेलन से शांति का वातावरण बनाने में सहायता मिलेगी । समारोह के मुख्य अतिथि भ्राता उदय वर्मा जिलाध्यक्ष बिलासपुर ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा ''शांति की चर्चा सब करते हैं लेकिन कार्य अशांति का करते हैं।' सम्मेलन में पधारे हुए अन्य वक्तागणों ने शांति में रहने का बल दिया। □

बम्बई (मुलुण्ड): त्रिमूर्ति शिव जयंती के शुभ अवसर पर जन-जन को संदेश देने हेतु शिव परिचय नामक ५०००० छोटी पुस्तिका छपवाकर मुलुण्ड, थाना मांडुप, चेक नाका, लोनावला तथा अन्य गांवों के करीब १०८ शिव मंदिरों में दिव्य संदेश दिया गया तथा थाना के महाजन बाड़ी में चैतन्य शिव शंकर की झांकी, शिव दर्शन प्रदर्शनी तथा प्रवचन का भव्य कार्यक्रम रखा गया । जिसको अनगिनित लोगों ने देखा तथा लाभ उठाया। □

चोपड़ा: शिवरात्रि के महान पर्व के उपलक्ष्य में चोपड़ा शहर में ''ज्ञानसत्र'' तथा सांस्कृतिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया ।

शांति यात्रा भी निकाली गई। एक नये राजयोग भवन का उद्घाटन भी सम्पन्न हुआ। □

भंडारा: इस वर्ष ५१वीं शिव जयंति समारोह भंडारा—सेवा-केंद्र पर भंडारा नगर परिषद के नव निर्वाचित अध्यक्ष भ्राता रविंद्र कुमार जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर नगर के अनेक अग्रणी गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। ब्र.कु. शांता बहन,संचालिका सेवाकेंद्र भंडारा ने शिव जयंति का रहस्य समझाकर शिव पिता का सभी को दिव्य संदेश दिया। □

मिर्जापुर: सेवाकेंद्र द्वारा दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया । २५ फरवरी को प्रभातफेरी शहर के मुख्य मार्गों से होकर निकाली गई । सायंकाल अनेकता से एकता वी.डी.ओ. फिल्म भी दिखलाई गई । २६ फरवरी को दिन में एक बजे से ४ बजे तक बैंडबाजे के साथ एक शोभा यात्रा निकाली गई । सायंकाल आश्रम के प्रांगण में आध्यात्मिक प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया जिसका शुभारम्भ जिला सोल्जर बोर्ड अधिकारी भ्राता के.पी. दुबे जी के द्वारा सम्पन्न हुआ । इसके अलावा पूर्व जिला अधिकारी के निवास स्थान पर ३ दिन का योग शिविर रखा गया। □

कानपुर (किदवई नगर): सेवाकेंद्र की ओर से स्वर्ण जयंति के अंतिम वर्ष को बड़े उत्साह व उमंग के साथ मनाया गया । सुबह अमृतवेले सुंदर प्रभातफेरी शहर के विभिन्न मार्गों से निकाली गई फिर सेवार्थ शिव के पांच बड़े-बड़े मंदिरों में शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इसके द्वारा हजारों भक्तों ने शिवबाबा का परिचय प्राप्त किया। □

नागपुर: शिव जयंति के पावन पर्व पर नागपुर शहर में शिव नगर, अयोध्या नगर, चिंतेश्वर, डीफेंस, मानेवाड़ा रोड खामल, तुकडोजी, कामठी आदि स्थानों पर ''शिव दर्शन'' प्रदर्शिनियां लगाई गयीं । हजारों आत्माओं ने शिवबाबा का दिव्य संदेश प्राप्त किया। □

गोंदिया: शिवरात्रि के उपलक्ष्य में गोंदिया सेवाकेंद्र की ओर से शिवबाबा का संदेश देने हेतु नागरा गांव में जहां शिव मंदिर में बहुत बड़ा मेला लगता है वहां पर प्रदर्शनी लगाई गयी । इसी दिन रजे गांव घाट पर बहुत बड़े मेले में प्रदर्शनी लगाई गयी । तुमसर शहर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इन कार्यक्रमों द्वारा अनेक पत्रकारों तथा प्रमुख व्यक्तियों को शिवबाबा का संदेश मिला। □

कटक (तलंगा बाज़ार): शिवरात्रि के अवसर पर शिवबाबा का संदेश जन-जन को देने हेतु 'शिव दर्शन' प्रदर्शनी लगाई गई । जटनी, बड़वील में विशेष प्रोग्राम द्वारा जन-जन को संदेश दिया गया । परमहंस एक गांव के मेले में पूरा दिन प्रदर्शनी लगी रही । इन प्रदर्शनियों द्वारा हजारों आत्माओं ने शिवबाबा का परिचय सुना । □

बालेश्वर (उड़ीसा): सेवाकेंद्र की ओर से महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर ८ शिव मंदिरों में एक साथ प्रदर्शनी, प्रवचन व प्रोजेक्टर स्लाइड-शो के द्वारा शिवभक्तों को शिवबाबा का संदेश दिया गया तथा कई हज़ार पर्चों द्वारा भी लोगों को संदेश मिला। □

रांची: सेवाकेंद्र के द्वारा ५१वां महाशिव जयंती समारोह बहुत ही धूमधाम से मनाया गया । परम प्यारे मीठे शिवबाबा का ध्वजारोहण रांची विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के अध्यक्ष भ्राता डॉक्टर सुशील माधव पाठक जी तथा केंद्रीय कारागार के अधीक्षक भ्राता दशरथ प्रसाद सिंह जी के द्वारा हुआ । इस शुभ दिवस पर स्थानीय दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक, डॉ. वकील, प्रिंसीपल आदि विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्ति दिन भर ईश्वरीय संदेश प्राप्त करने आते रहे । इसके अतिरिक्त शिवरात्रि के अवसर पर यहां रांची पहाड़ी पर आयोजित मेले में रांची केंद्र द्वारा शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। □

आगरा: समाचार मिला है कि आगरा में परम पुनीत शिवरात्रि महोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया । यह महोत्सव आगरा के क्षेत्रीय मुख्यालय ओमशांति भवन में ही मनाया गया । क्षेत्रीय कांग्रेस अध्यक्ष भ्राता अमर सिंह मदारिया द्वारा शिवबाबा का झंडा फहराया गया । तदुपरांत ओमशांति भवन से प्रभातफेरी निकाली गई । □

चालीस गांव: सेवाकेंद्र की ओर से महाशिवरात्रि पावन पर्व पर सब्जी मंडी के पुराने शिव मंदिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन प्रसिद्ध व्यापारी सोमनाथ जी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया । इस प्रदर्शनी को लगभग ३००० आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया । विशिष्ट व्यक्तियों के स्नेह-मिलन पर भी अच्छी सेवा हुई। □

बड़ौदा: महाशिवरात्रि का त्योहार बड़े धूमधाम से मनाया गया । नये मकान 'मंगलवाड़ी' में भवन उद्घाटन समारोह मनाया गया । इस दिन सारे शहर में प्रभातफेरी निकाली गई । शिव भक्तों को ईश्वरीय संदेश देने के लिए कई शिव मंदिरों में प्रदर्शनियां लगाईं, जैसे कामनाथ, नागेश्वर, नीलकंठेश्वर, जंगलेश्वर आदि । भक्तों की भारी भीड़ ने इन प्रदर्शनियों को देखकर लाभ उठाया। □

आदिपुर: सेवाकेंद्र द्वारा शिव जयंति बड़े उत्साहपूर्वक मनाई गई । इस अवसर पर एडवोकेट्स, इंजीनियर्स, शिक्षकगण, सामाजिक कार्यकर्ता तथा विभिन्न व्यवसायियों के लोगों ने पधारकर शिवबाबा का यथार्थ परिचय प्राप्त किया । शिव जयंती के दिन ही दोपहर को यहां के शिव मंदिर में जहां हर वर्ष मेला लगता है वहीं अपनी प्रदर्शनी लगाई गयी जिनको हजारों आत्माओं ने देखा तथा लाभ उठाया। □

पणजी-गोवा: सेवाकेंद्र की तरफ से डिचोली, सावर्डे गांव में आध्यात्मिक प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गये जिससे अनेकों ने लाभ लिया । साथ-साथ तालेगांव, कालापुर में भी ''आध्यात्मिकता की आवश्यकता'' इस विषय पर प्रवचन एवं राजयोग प्रदर्शनी आयोजित की गई । इसके अलावा हनुमान यात्रा के समय रात भर प्रदर्शनी और चैतन्य देवियों का स्टॉल लगाया गया । इस तरह अनेक आत्माओं को शिवबाबा का संदेश मिला। □

दिल्ली (चांदनी चौक): शिवरात्रि के दिन दरियागंज स्थित नव-निर्मित शिव जगदम्बा मंदिर के हॉल में शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रात:काल से ही शिव भक्तों ने शिवबाबा की पूजा के साथ-साथ शिवबाबा का परिचय भी प्राप्त किया । प्रात: सेवाकेंद्र पर वैश्य कोआपरेटिव बैंकों के डॉयरेक्टर भ्राता त्रिलोक चंद गुप्ता ने शिव ध्वजारोहण करके आबू वरदान भूमि की महिमा सुनाई। □

खारी बावली: सेवाकेंद्र द्वारा ५० लाउडस्पीकर सारे बाज़ार में लगाये गये जिन द्वारा सारा दिन शिवबाबा की याद दिलाने वाले मधुर गीत तथा प्रवचन जनता सुनती रही । यहां पर शिव ध्वाजारोहण संसद सदस्य भ्राता जयप्रकाश अग्रवाल ने किया। रोटरी क्लब के निमंत्रण पर सिविल लाइंस अलीपुर रोड के एक हॉल में विशिष्ट व्यक्तियों के समक्ष दादी हृदयमोहिनी जी का भाषण हुआ। □

दिल्ली (मालवीय नगर): सेवाकेंद्र की ओर से शिव जयंति के उपलक्ष्य में कुछ गणमान्य व्यक्तियों का संगठन हुआ । शिव ध्वजारोहण इस क्षेत्र के कौंसिलर भ्राता देवेंद्र जी द्वारा सम्पन्न हुआ । इसके अतिरिक्त खानपुर में एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां के प्रेजीडैंट द्वारा सम्पन्न हुआ । साथ-ही-साथ एक समारोह किया गया, समारोह में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम रखे गये। उसी के फलस्वरूप पुष्प विहार कॉलोनी में एक कार्यक्रम का निमंत्रण मिला जिसमें प्राइम मिनिस्टर के सिक्यिूरिटी के करीब ५० सदस्य शामिल थे इस तरह अनेक आत्माओं की सेवा हुई। □

दिल्ली (हरीनगर): राजयोग केंद्र, हरीनगर दिल्ली का प्रथम वार्षिक उत्सव भवन के प्रांगण में ही बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ । इस समागम में मुख्य अतिथि प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के भूतपूर्व जनरल मैनेजर भ्राता एन.आर. चंद्रन जी थे । दिल्ली म्यूनिसिपल कार्पोरेशन की स्टैंडिंग कमेटी के सदस्य तथा तिलक नगर के रहवासी भ्राता गणेशदास जी ने अपने विचार सुनाए । लगभग २५० गणमान्य व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम से लाभ उठाया। □

दिल्ली (पश्चिम विहार): समाचार मिला है कि पश्चिम विहार सेवाकेंद्र की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में ए.-४ ब्लॉक शुभनिकेतन के सामने दो दिवसीय शिव अवतरण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । शिव जयंति के दिन मुख्य कार्यकारी पार्षद भ्राता भौंरीलाल शास्त्री जी ने शिव ध्वजारोहण का कार्य भी सम्पन्न किया। □

नयी दिल्ली (विकासपुरी): महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर विकासपुरी में चार दिवसीय शिव दर्शन राजयोग प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । इस प्रदर्शनी को भिन्न-भिन्न जाति, धर्म तथा वर्ग के लोगों ने देखा और अपने जीवन में आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा ली। □

नयी दिल्ली (कालकाजी): शिव जयंति के स्वर्णिम अवसर पर नेहरू प्लेस मेन रोड पर एक प्रदर्शनी और शिव शंकर में अंतर वाली झांकी बनाई गई जिसको देखकर लोगों ने लाभ उठाया । इसके अलावा सेवाकेंद्र पर ध्वजारोहण भ्राता सेठी द्वारा सम्पन्न हुआ। □

दिल्ली (मजलिस पार्क): त्रिमूर्ति शिव जयंति के उपलक्ष्य में चार मुख्य समारोह विभिन्न स्थानों पर रखे गये जिनमें समयपुर, दरियापुर, मजलिस पार्क और इब्राहिमपुर। अन्य स्थानों पर प्रदर्शनी व प्रवचन के कार्यक्रम हुए । शिवरात्रि के दिन सेवाकेंद्र पर महानगर पार्षद भ्राता महेंद्र सिंह जी ने पधारकर प्रसाद ग्रहण किया। □

दिल्ली (शाहदरा): समाचार मिला है कि शिवरात्रि के महापर्व पर बड़ौत कस्बा में एक शिव मंदिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व शाम को विशेष समारोह का आयोजन किया गया । इन अवसरों पर इलाके के तथा आसपास के गांवों के लोगों ने काफी लाभ उठाया तथा आसपास के गांवों से निमंत्रण भी मिला । अब बड़ौत में स्थाई रूप से सेवाकेंद्र खोलकर ईश्वरीय सेवा का कार्य किया जा रहा है। □

दिल्ली (कृष्णानगर): सेवाकेंद्र की ओर से शिव जयंति के महान पर्व पर गीता कॉलोनी रामलीला मैदान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया था। इस समारोह में प्रभावशाली प्रवचन द्वारा शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य स्पष्ट किया गया तथा एक सुंदर आकर्षक ड्रामा भी प्रस्तुत किया गया। इस प्रोग्राम से काफी लोगों ने लाभ उठाया। □

लुधियाना: समाचार मिला है कि शिवरात्रि का त्योहार बड़े धूमधाम से मनाया गया। सेवाकेंद्र से सम्बंधित अन्य स्थानों पर भी शिव जयंति मनायी गयी। लुधियाना के प्रसिद्ध हनुमान मंदिर एवं विष्णु मंदिर से भी बहनों को प्रवचन के लिए निमंत्रण प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त जंगरावा एवं खन्ना शहर में भी कार्यक्रम रखे गये। □

रॉयपुर (म.प्र.): स्वर्ण जयंति वर्ष के समापन अवसर पर विश्वकल्याण आध्यात्मिक सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में ग्रेट-ब्रिटेन से ब्र.कु. सुदेश जी पधारी थीं। अंचल के लोकप्रिय सांसद एवं प्रसिद्ध गांधीवादी विचारों के पोषक माननीय केयूर भूषण जी, प्रतिष्ठित दैनिक अमृत संदेश एवं साप्ताहिक आमंत्रण के प्रधान सम्पादक भ्राता गोविंदलाल जी वोरा थे। इस अवसर पर म.प्र. एवं विदर्भ के सर्वाधिक प्रसारित दैनिक नवभारत के सह-सम्पादक भ्राता कुमार साहू जी आदि लोगों ने पधारकर सम्मेलन को सफल बनाया। □

हिसार: यहां कृषि विश्वविद्यालय के किसान मेले में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं स्वास्थ्य प्रदर्शनी लगाई गयी। उपकुलपति श्री एल.डी. कटारिया ने इसका उद्घाटन एवं अवलोकन किया तथा इस सेवा कार्य की बहुत सराहना की। इसी दौरान ही यहां गांवों में प्रदर्शनी लगाई गयी। लगभग ७००० आत्माओं ने लाभ लिया। □

चण्डीगढ़: शिवरात्रि का पावन पर्व अत्यंत हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यहां पर किसी भी प्रकार का प्रोग्राम बिना आज्ञा से नहीं किया जाता, फिर भी आवश्यक मंजूरी लेकर शहर के प्रमुख भागों में प्रभातफेरियां आयोजित की गईं। शिवबाबा का संदेश जन-जन तक देने हेतु पर्चे भी छपवाए गये। सायंकाल को एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। शहर के जाने-माने प्रतिष्ठित एवं प्रमुख व्यक्तियों ने भाग लिया। कार्यक्रमों में प्रवचन, दिव्यगीत एवं नाटक आदि प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त इस शुभ अवसर पर चण्डीगढ़ के प्रमुख शिव मंदिरों से भी बहुत निमंत्रण प्राप्त हुये। □

बल्लभगढ़: सेवाकेंद्र की ओर से महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में दो अलग-अलग स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनियां लगाई गयीं। उद्घाटन शहर के प्रतिष्ठित व्यक्ति डॉ. चंद्रसेन जी ने किया। इस प्रदर्शनी को काफी संख्या में लोगों ने देखा और लाभ उठाया। □

बोकारो: शिव जयंति सभी भाई-बहनों ने बड़े ही धूमधाम से मनाई। शिव जयंति महोत्सव की शुरुआत ५१ घंटे के अखंड योग-भट्ठी से की गई। दो दिन की "शिव दर्शन प्रदर्शनी" नये राजयोग भवन में रखी गयी। इस तरह अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। □

लखनऊ (हजरतगंज): शिवरात्रि के पावन पर्व पर कई हज़ार निमंत्रण पत्र छपवाकर शहर में बांटे गये। शाम को एक सामूहिक समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रसिद्ध संत तांत्रिक भूतनाथ जी महाराज एवं सर्वधर्म मिलन के अध्यक्ष स्वामी प्रज्ञानंद जी पधारे थे। सभी मुख्य आगुंतकों ने अपने विचार प्रस्तुत किये। □

अम्बाला कैंट: शिव जयंति के उपलक्ष्य में शाहाबाद में दो दिवसीय प्रदर्शनी का उद्घाटन वहां के प्रमुख डॉ. ओमप्रकाश जी ने किया। हज़ारों लोगों ने प्रदर्शनी से लाभ उठाया। दूसरे दिन एक भव्य कार्यक्रम रखा गया जिसमें प्रवचन, गीत, ड्रामा आदि प्रस्तुत किये गये। □

ब्रह्मपुर: ज्ञात हुआ है कि त्रिमूर्ति शिव जयंति के पावन पर्व पर जन-जन को संदेश देने हेतु गांधी नगर सेवाकेंद्र की ओर से एक सप्ताह पूर्व से ही चारों ओर ग्राम-ग्राम में शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनियों का कार्यक्रम रहा। शिवरात्रि के दिन शाम को एक समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें शहर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। □

अहमदाबाद (नारायणपुरा): सेवाकेंद्र की तरफ से शिवरात्रि के पावन पर्व पर सेवाकेंद्र पर ही श्री मोगी भाई शाह के हाथों ध्वजारोहण करवाया गया। ध्वजारोहण के बाद जनता के समक्ष अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि "हमने आज एक ऐसा झंडा लहराया है जो एक दिन प्रत्येक मन पर लहरायेगा।" □

आज़मगढ़: सेवाकेंद्र की ओर से शिवरात्रि के एक दिन पूर्व दिव्य संदेश देने के लिए एक शांति यात्रा निकाली गई जिसके द्वारा शहर की हज़ारों आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। शिवरात्रि के दिन भंवरनाथ शिव मंदिर में राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। सिद्धपुर ग्राम में दो दिन के लिए राजयोग प्रदर्शनी का कार्यक्रम रखा गया। इन कार्यक्रमों से अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला।

शेष पृष्ठ १२ पर

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, सम्पादक, ९/१९ कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा ओमशांति प्रैस कृष्णानगर,